Shyam -Vidya Ayurved P.G. Entrance Coaching Center,Bhopal (M.P)
By- Dr. Neelima Singh Lodhi (M.D.) Mob - 09826438399, 09993961427

''आयुर्वेद''

व्युत्पत्ति :– आयुषः वेदः आयुर्वेदः। (वैद्यक शब्दकोश)
निरूक्ति :– आयुरस्मिन् विद्यते अनेन् वा आयुर्विन्दति इति आयुर्वेदः। (सु. सू. 1/11)
आयुरनेन ज्ञानेन विद्यते **ज्ञायते विदन्ते लक्ष्यते** न रिष्यतीत्यायुर्वेदः। (का. वि. 1)

परिभाषा :– हिताहितं सुखं दुःखम् आयुस्तस्य हिताहितम्। मानं च तच्च यत्रोक्तं आयुर्वेदः स उच्चते। **(च.सू. 1/41)**
व्यवहारिक परिभाषा :– आयुर्हिताहितं व्याधेर्निदानं शमनं तथा। विद्यते यत्र विद्वभ्दिः स आयुर्वेद उच्यते। –(भा.प्र.)

प्रयोजन :– 1. प्रयोजनं चास्यं स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणं आतुरस्य विकार प्रशमनं च। (च. सू. 30/26)
2. धातुसाम्यक्रिया चोक्ता तन्त्रस्यास्त्र प्रयोजनम्। (च. सू. 1/53)
3. इह खल्वायुर्वेद प्रयोजनं – व्याध्युपसृष्टानां व्याधिपरिमोक्षः स्वस्थस्य रक्षणञ्च। (सु. सू. 1/22)

आचार्य चरक ने आयुर्वेद के दो प्रयोजन माने है। –
1. स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना 2. रोगी के रोग का उन्मूलन करना।
और सुश्रुत ने भी आयुर्वेद के दो प्रयोजन माने है। किन्तु उनका क्रम आचार्य चरक से भिन्न है। –
1. व्याधि से ग्रसित व्यक्ति की व्याधि को दूर करना 2. स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना

अष्टांग आयुर्वेद

संहिता	1	2	3	4	5	6	7 8
चरक	काय	शालक्य	शल्य	**विषगर वैरोधिक प्रशमन**	भूतविद्या	कौमार्यभृत्य	रसायन – बाजीकरण
सुश्रुत	शल्य	शालक्य	काय	भूतविद्या	कौमार्यभृत्य	अगदतंत्र	रसायन – बाजीकरण
वाग्भट्ट	काय	बाल	**ग्रह**	**उर्ध्वांग**	शल्य	**दंष्टा**	**जरा – वृषैः।**

''आयु''

निरूक्ति– आयु इति जीवित कालः।
परिभाषा– शरीरेन्द्रिय सत्वात्मसंयोगो धारि जीवितम्। नित्यगश्चानुबन्धश्च पर्यायैरायुरूच्यते।। (च.सू. 1/42)
शरीर + इन्द्रिय + सत्व + आत्मा के संयोग को 'आयु' कहते हैं।

पर्याय – तत्रायुश्चेतनानुवृत्तिः जीवितमनुबन्धो धारि चेत्येकोऽर्थः। (च. सू. 30/22)
आयु के पर्याय – धारि, जीवितम्, नित्यग, अनुबन्ध + चेतनानुवृत्ति (च. सू. 30/22)।
{काल के 2 भेद –**1. नित्यग** 2. आवस्थिक – कालो हि नित्यगश्चावस्थिकश्च। च. वि. 1/21}
{दोष के 2 भेद –**1. अनुबन्ध्य** 2. अनुबन्ध – अनुबन्ध्यानुबन्धविशेषकृतस्तु बहुविधो दोषःभेदः। च. वि. 6/11}

आयु के प्रकार – 4 – (1) हितायु (2) अहितायु (3) सुखायु (4) दुःखायु।
हिताहितं सुखं दुःखम् आयुस्तस्य हिताहितम्। मानं च तच्च यत्रोक्तं आयुर्वेदः स उच्चते।। (च.सू. 1/41)
सुश्रुतानुसार :– (1) दीर्घायु (2) मध्यमायु (3) अल्पायु (सु.सू. 35/4–11)
✓ हितायु अहितायु, सुखायु और असुखायु के लक्षणों का वर्णन चरक संहिता सूत्र स्थान के **'अर्थेदशमहामूलीय'** अध्याय में किया गया है। (च. सू. 30/24–25)

www.ayurvedpg.com

"शरीर"

निरूक्ति :– शीर्यते तत् शरीरम्।

परिभाषा – 1. दोष धातु मल मूलं हि शरीरम्। (सुश्रुत)
2. दोष धातु मल मूलो हि देह। (अष्टांग संग्रह)
3. दोष धातु मला मूल संदा देहस्य। (अष्टांग हृदय)

विशेषता :– 1. चेतनाधिष्ठान भूतम् 2. पंचममहाभूतविकार समुदायात्कम् 3. समयोगवाही।

संगठन :– 1. शक्ति रूप द्रव्य – दोष, 2. शक्ति युक्त द्रव्य – धातु, 3. शक्ति हीन द्रव्य – मल।

"दोष"

परिभाषा – 1. **दूषयन्तीति दोषाः।** (चरक) **2. दूषणात् दोषाः।** (शारंर्ग्धर)।

1. शारीरिक दोष :– शारीरिक दोष तीन है – वात, पित्त और कफ। – इनमें वात प्रधान है।

दोष संख्या :– 1. वायुः पितं **कफ**श्चोक्तः शरीरो दोष संग्रहः। (चरक सू. 1/56)
2. वात पित्त **श्लेष्माण** एव देह सम्भव हेतवः। (सुश्रुत सू. 21/2)
3. वायु पित्तं कफश्चेति **त्रयो** दोषा समासतः। (अ. हृ. सू. 1/6)
4. **वातपित्तकफा** दोषाः **शरीरव्याधि** हेतवः। (काश्यप खिल 3/20)

2. मानसिक दोष :– 2 – मानसिक दोष 2 है – रज, तम – इनमें रज प्रधान है।
1. मानसः पुनरूद्दिष्टो रजश्च तम एव च। (च. सू. 1/56)

"पंचमहाभूत का दोषों से संबंध"

त्रिदोष	पान्चभौतिकता (वाग्भट्ट)	(अष्टांग संग्रह सू. 20/3)
1. वात	वायु + आकाश	वाय्वाकाशधातुभ्यां वायुः
2. पित्त	अग्नि	**आग्नेय पित्तम्**
3. कफ	जल + पृथ्वी	अम्भःपृथिवीभ्यां श्लेश्मा

"दोषों की व्युत्पत्ति एवं उत्पत्ति"

त्रिदोष	व्युत्पत्ति (सु. सू. 21/5)	उत्पत्ति (सु. सू. 43/9)	मनोगुण (शारंर्ग्धर पू. 5)
1. वात	'वा गतिगन्धनयो' – गति कर्ता	तत्र वायोरात्मैवात्मा	रजोगुण प्रधान
2. पित्त	'तप संतापे' – दहन कर्ता	**पित्तमाग्नेयं**	सत्वगुण प्रधान
3. कफ	'श्लिष आलिंगने' – संयोग कर्ता	श्लेष्मा सौम्य इति	तमोगुण प्रधान

वाग्भट्टानुसार – शरीर–वय–विभिन्न कालो से दोषों का सम्बन्ध (अ. सं. सू. 1/25) :–

दोष	शरीर में प्रकोप स्थान	वय	दिन के	रात्रि के	आहार परिपाक काल
1. वात	हृदय व नाभि के नीचे	वृद्धावस्था	अपरान्ह	अपररात्रि	अन्त में/पक्वावस्था में
2. पित्त	हृदय व नाभि के मध्य	युवावस्था	मध्यान्ह	मध्यरात्रि	मध्य में/विदग्धावस्था में
3. कफ	हृदय व नाभि के ऊपर	बाल्यावस्था	पूर्वान्ह	पूर्वरात्रि	आदि में/आमावस्था में

आश्रयी (दोष) एवं आश्रय (धातु, मल) संबंध तथा क्षयवृद्धि का चिकित्सा सिद्धान्त :–

तत्रास्थानि स्थितो वायुः, असृक्स्वेदयोः पित्तम्, शेषेषु तु श्लेष्मा। – (अ. सं. सू. 19/13)

दोष	धातु	मल	वृद्धि चिकित्सा	क्षय चिकित्सा
1. वात	अस्थि	– –	वृंहण	लंघन
2. पित्त	रक्त	स्वेद	अपतर्पण	संतर्पण
3. कफ	रस, मांस, मेद, मज्जा, शुक्र	पुरीष, मूत्र	अपतर्पण	संतर्पण

www.ayurvedpg.com

दोष उनके शामक व कोपक रस :–

क्र. सं.	दोष	कोपक रस	शामक रस वरीयता सहित
1.	वात	कटु, तिक्त, कषाय	लवण, अम्ल, मधुर (321)
2.	पित्त	कटु, अम्ल, लवण	तिक्त, मधुर, कषाय (516)
3.	कफ	मधुर, अम्ल, लवण	कटु, तिक्त, कषाय (456)

''वात, पित्त एवं कफ के स्थान''

दोष	मुख्य स्थान	अन्य स्थान
1. वात	चरक – पक्वाशय, सुश्रुत – श्रोणिगुदासंश्रय वाग्भट्ट – पक्वाधान	वस्ति, पुरीषाधान, कटि, सक्थि, पाद, अस्थि, पक्वाशय। – (चरक) कटि, सक्थि, पाद, अस्थि, **श्रोत्र, स्पर्शनेन्द्रिय।** – (सुश्रुत) **श्रोत्र, स्पर्शनेन्द्रिय,** अस्थि, मुख्यतः 'पक्वाधानं'। – (वाग्भट्ट) **अस्थि–मज्जा – (काश्यप)**
2. पित्त	चरक – आमाशय, सुश्रुत – पक्वामाशय मध्य **वाग्भट्ट – नाभि**	स्वेद, **रस,** लसीका, **रूधिर,** आमाशय। – (चरक) **यकृत, प्लीहा, हृदयं,** दृष्टि, त्वक्। – (सुश्रुत) **दृग्, स्पर्शन,** रस, रक्त, मुख्यतः 'नाभि'। – (वाग्भट्ट)
3. कफ	चरक – उरः प्रदेश, **सुश्रुत – आमाशय** वाग्भट्ट – 'सुतरामुर'	उर, शिरोग्रीवा, पर्व, आमाशय, **मेद।** – (चरक) उर, कण्ठ, शिर, संधियॉ। – (सुश्रुत) **क्लोम, घ्राणं, जिह्वा, रस, मेद,** मुख्यतः 'सुतरामुर'। – (वाग्भट्ट)

दोष	कर्म (च.सू.18/49 –51)
1. वात	**उत्साहोच्छ्वासनिःश्वासचेष्टा धातुगति समा। समो मोक्षो गतिमतां वायो कर्माविकारजम्।।**
	कार्य करने में **उत्साह**, श्वास वायु का बाहर निकालना, अन्दर ले जाना, शरीरिक व मानसिक चेष्टाओं को प्रवृत करना, धातुओं को सम रखना, गतिशील मल मूत्रादि के वेगों को बाहर निकालना – ये सभी वात के कार्य है।
2. पित्त	**दर्शनं पक्तिऊष्मा च क्षुत्तृष्णादेहमार्दवम्। प्रभा प्रसादो मेधा च पित्त कर्माविकारजम्।।**
	देखना, पचाना, शरीर में तापांश को नियमित रखना, भूख, प्यास लगना, शरीर में कोमलता बनाये रखना, शरीर की कान्ति, मन की प्रसन्नता और धारण शक्ति को बनाये रखना – ये सभी पित्त के कार्य है
3. कफ	**स्नेहो बन्धः स्थिरत्वं च गौरव वृषताबलम्। क्षमाधृतिरलोभश्च कफ कर्माविकारजम्।।**
	शरीर में स्नेह को बनाये रखना, सन्धिबंधनो को ठीक रखना, शरीर में या सन्धियों में शिथिलता का न होना, शरीर भारीपन बनाये रखना, मैथुन करने की शक्ति और बल को स्थिर रखना, सहन शक्ति , धीरता और लोभ न करना – ये सभी कफ के कार्य है।

www.ayurvedpg.com

''वात के गुण''

भौतिक गुण :–

1. **रूक्षः शीतो लघुः, सुक्ष्मश्चलोऽथ, विशदः खरः। (च. सू. 1/59)**
   चरक ने वात के 7 गुण बताए है।
2. **कुशः साङ्कृत्सायनः– 'रूक्ष लघु शीत दारूण खरविशदाः षडिमे वातगुणा भवन्ति'। (च. सू. 12/4)**
   कुश ने वात के 6 गुण बताए है। (– सूक्ष्म, चल = + दारूण)
3. **तत्र रूक्षो लघुः, शीतः खर, सूक्ष्मश्चलोऽनिलः। (अ. हृ. सू. 1/14)**
   वाग्भट्ट ने वात के 6 गुण बताए है। (वाग्भट्ट ने चरकोक्त **'विशद'** गुण नहीं माना है)

रासायनिक गुण :–

(1) अर्मूत, योगवाही – (चरक)
(2) आशुकारी, अचिन्त्यवीर्य – (सुश्रुत)

मानसिक गुण :–

1. रजोगुण प्रधान – (शारंग्धर)

(2) **वायु के पर्याय :–** नित्य, सर्वत्र, स्वंयम्भू, सर्वात्मा, सवलोकनमस्कृत, भगवान्, दोषों में नेता, रोगसमूहराट, द्विगुणी, तिर्यकगामी, रजोगुणबहुल, व्यक्तकर्मा, **अव्यक्त, आशुकारी, अचिन्त्यवीर्य।** – (सुश्रुत)

(चरक) – मृत्यु, यम, **नियन्ता,** प्रजापति, अदिति, **अव्यय, विभु, विश्वकर्मा, विश्वरूपा,** सर्वग, भगवान्, सूक्ष्म, विष्णु।

- आचार्य काश्यप ने अन्न को 'प्रजापति' की संज्ञा दी है।
- आचार्य चरकानुसार अव्यय, विभु, विश्वकर्मा और विश्वरूपा वायु और आत्मा दोनों के पर्याय है।
- आचार्य सुश्रुत ने वायु, काल और जठराग्नि इन सभी को 'भगवान्' शब्द से सम्बोधित किया है।

''पित्त के गुण''

भौतिक गुण :–

1. **पित्तं सस्नेहमुष्णं तीक्ष्ण च द्रवम्म्लं सरं कटु। (च. सू. 1/60)**
   चरक ने पित्त के 7 गुण बताए है।
2. **पित्तं सस्नेह तीक्ष्णोष्णं लघु विस्त्रं सरं द्रव्यं। (अ. हृ. सू. 1/13)**
   वाग्भट्ट ने पित्त के 7 गुण बताए है। (– कटु, अम्ल = + लघु, विस्त्रं → वाग्भट्ट)
3. **औष्ण्य, तैक्ष्ण्य, रौक्ष्य, लाघव वैशद्य गुण लक्षणं पित्त। (सु. सू. 42/9)**

रासायनिक गुण –

(1) गन्ध :– विस्र (वाग्भट्ट), पूति – सुश्रुत।
(2) **प्राकृतिक वर्ण –** नील या पीत वर्ण विकृत वर्ण – हरित वर्ण (सुश्रुत)।
(3) **प्राकृतिक रस –** कटु रस, **(शारंग्धर –कटु, तिक्त)** विदग्धावस्था – अम्ल रस (सुश्रुत)।

मानसिक गुण :–

सत्वगुण प्रधान – पित्तमुष्णं द्रवं पीतं नीलं सत्त्वगुणोतरम्। (शा. पू. 5/25)

✓ **पर्याय – वैश्वानर,** वह्नि, पावक, अनल।

''कफ के गुण''

1. गुरु शीत, मृदु स्निग्ध, मधुर स्थिर, पिच्छलाः। **(च. सू. 1/61) –** चरक ने कफ के 7 गुण बताए है।
2. स्निग्धः शीतो गुरुः मन्दः श्लक्ष्णो मृत्स्न स्थिर कफः। **(अ. हृ. सू. 1/12)**
   वाग्भट्ट ने पित्त के 7 गुण बताए है। (–मधुर, मृदु, पिच्छिला = + मन्दः, मृत्सन, श्लक्ष्ण → वाग्भट्ट)

रासायनिक गुण :–

(1) प्राकृतावस्था में रस – मधुर विदग्धावस्था – लवण (सुश्रुत)
(2) प्राकृतावस्था में – बल (ओज) वैकृतावस्था में – मल (पाप्मा) – चरक।

मानसिक गुण :–

तमोगुण प्रधान – तमोगुणाधिकः स्वादुः विदग्धो लवणो भवेत्। (शा. पू. 5/29)

www.ayurvedpg.com

तीसटाचार्य के अनुसार दोषों के प्रकोप के कारण :–

1. वात :– व्यायाम, अपतर्पण चिकित्सा, प्रपतन, **अंग–भंग**, दोष,धातु,मल के क्षय होने से, **जागरण**, **वेगविधारण,** अतिशुचिता, अत्यधिक शीत, **त्रास (भय),** रूक्ष–क्षोभकारक एवं कटु–तिक्त–कषाय रसों के सेवन से।

2. पित्त :– कटु–अम्ल–लवण, विदाही एवं तीक्ष्ण द्रव्यों का सेवन करने से, **क्रोध,** उपवास से, आतप सेवन से, स्त्री सम्पर्क, तिल, अजसी, दधि, सुरा, शुक्त व कांजी आदि के सेवन से पित्त कुपित होता है।

3. कफ :– गुरू, मधुर रस, स्निग्ध एवं द्रव द्रव्यों का सेवन करने से, दुध, इक्षुरस से बने पदार्थो का सेवन करने से, दही एव घृत से बने मालपुए का सेवन करने से एवं **दिवास्वप्न से** कफ प्रकुपित होता है।

चरकानुसार दोषों का संचय, प्रकोप, शमन :–

		वात	पित्त	कफ
1. संचय	–	ग्रीष्म	वर्षा	**हेमन्त (शिशिर – वा.)**
2. प्रकोप	–	**वर्षा (प्रावृट् – सु.)**	शरद	बसंत
3. शमन	–	शरद	हेमन्त	ग्रीष्म

दोषों का निर्हरणकाल :– माधव प्रथमे मासि नभस्य प्रथमे पुनः। सहस्य प्रथमे चैव हारयेत् दोषसन्चयम्। (च.सू. 7/46)

दोष	**कर्म**	**निर्हरण काल**	**(चरकोक्त माह)**
वात	वस्ति	**श्रावण**	**नभ** – नभस्य
पित्त	विरेचन	**अगहन (माघशीर्ष)**	**सहा** – सहस्य
कफ	वमन	**चैत्र**	**मधु** – माधव

कोष्ठ → शाखा दोषगमन

व्यायामात् उष्मणः तैक्ष्ण्यात् अहितस्यानवचारणात्। कोष्ठात् शाखा मला यान्ति द्रुतत्वान्मारूतस्य च।।

(च. सू. 28/31)

(1) अधिक व्यायाम (2) उष्मा की तीक्ष्णता (3) अहितकर आहार विहार सेवन (4) वायु की अत्यंत तीव्र गति।

शाखा → कोष्ठ दोषगमन

वृद्धा विष्यन्दनात् पाकात् स्रोत्रोमुखविशोधनात्। शाखा मुक्त्वा मलः कोष्ठं यान्ति वायोश्च निग्रहात।।

(च. सू. 28/32)

(1) दोषों की वृद्धि (2) विष्यंदन (3) दोषों का पाक। (4) स्रोत्रों का मुख शोधन से (5) वायु के निग्रह से।

सुश्रुत के अनुसार दोषों के प्रकृतिस्थ गुण :–

प्रकृतिस्थ गुण	वायु का भेद	प्रकृतिस्थ गुण	कफ का भेद	प्रकृतिस्थ गुण	पित्त का भेद
पूरण	**1 प्राणवायु**	**स्नेहन**	1. क्लेदक कफ	**पक्तिकृत**	1. पाचक पित्त
उद्वहन	2. उदानवायु	**संधिश्लेषण**	2. श्लेष्मक	**रागकृत**	2. रंजक पित्त
प्रस्पन्दन	3. व्यान वायु	**रोपण**	3. बोधक	**मेधाकृत**	3. साधक पित्त
विवेक	**4. समान वायु**	**पूरण**	4. तर्पक	**तेजकृत**	4. आलोचक पित्त
धारण	5. अपान वायु	**बल एंव स्थिरता**	5. अवलम्बक	**उष्मकृत**	5. भ्राजक पित्त

www.ayurvedpg.com

वात के भेद

वायु भेद	स्थान	कर्म
1 प्राण	स्थानं प्राणस्य **मूर्धोरःकण्ठ**जिह्वास्य नासिका। – (चरक)। प्राणोऽत्र **मूर्धगः उरः कण्ठ** चरो – (वाग्भट्ट)।	ष्ठीवन, क्षवथु, उदगार, श्वसन एवं आहार पान –(चरक) **बुद्धिहृदयेन्द्रियचित्तधृक् – (अ. हृ. सू. 12/4)** बुद्धि, इन्द्रिय, हृदय, मन का धारण करना। – (वाग्भट्ट)।
2. उदान	नाभि, उर, कण्ठ में संचरण– (चरक)। उरः स्थानं उदानस्यनासानाभिगलां चरेत्–(वा) **फुफ्फुस का आधार –(शारंगंधर),** पवनोत्तम – सुश्रुत	वाक् प्रवृत्ति, **प्रयत्न, बल, वर्ण, ऊर्जा प्रदान करना।** (चरक) वाक्प्रवृत्ति, प्रयत्नोर्जाबलवर्ण **स्मृतिक्रियः।** – (वाग्भट्ट)। मनोविनोदानादि हिक्का, कास, उच्छवास। (भेल)
3. व्यान	**समस्त शरीर – (चरक,** सुश्रुत) व्यानो हृदि स्थितः कृत्सनदेहचारी महाजवः – **हृदय – वाग्भट्ट।** कृत्सनदेहचरो व्यानः। (सुश्रुत)	गति, प्रसारण, आक्षेप, उन्मेष, निमेष आदि क्रियाऐं। जम्भाई लेना, हृदय स्पंदन, स्रोतोशोधन, अन्न आस्वादन। रस, रक्त का संवहन एवं स्वेद विस्रावण। – (सुश्रुत)
4. समान	**अन्तराग्नेश्च पार्श्वस्थः।** अन्तराग्नि के समीप। (चरक) समानोऽग्निसमीपस्थः कोष्ठे चरति सर्वतः।(वा.) आमपक्वाशयचरः समानो वह्निसंगतः। (सुश्रुत)	**समानोऽग्निबलप्रदः।** स्वेददोषाम्बुवाहीनि स्रोतांसि समधिष्ठितः। –(चरक) अन्नं गृह्णाति **पचति विवेचयति** मुञ्चति। – (वाग्भट्ट)। अन्नग्रहण, **पाचन**, सार–किट्ट का पृथक्करण (विवेचन)।
5. अपान	वृषण, वस्ति ,मेढ्र, उरू, **नाभि,** वंक्षण, गुद – चरक। **श्रोणि,** वस्ति, मेढ्र, उरू – वाग्भट्ट।	अपानवायु, मूत्र, पुरीष, शुक्र,आर्तव व गर्भ का निष्कासन। (अपान वायु का स्थान = पक्वाधान – सुश्रुत)

वैदिक ग्रंथोक्त पांच वायु :–

1. **नाग** – उदगार
2. **कूर्म** – उन्मेष
3. **कूमल** – क्षुधा
4. **देवदत्त** – जृम्भा
5. **धनंजय** – सर्वव्यापी है, मरणोपरान्त भी रहती है।

- अथर्ववेद में – वात = वातीकृत, पित्त = मायु, कफ = बलास संज्ञा दी गयी है।
- कामशोकभयाद् वायुः क्रोधात् पित्तम् लोभात् कफम्। – (माधव निदान)
- मारुतमाकाश च वातः श्रितः **अग्निमादित्यं च पित्तं** सोमं वरूणं च कफः तास्तेषां देवताः। – (काश्यप)

- वार्योविद ने – वात को, मरिच ने – पित्त को, काप्य ने – कफ को शरीर का मूल रक्षक कहा हैं।
- प्राण वायु एवं तर्पक कफ दोनों का कर्म – **'पूरण'** है।
- **'विवेक'** समान वायु का प्रकृतिस्थ गुण कहा गया है।
- आचार्य सुश्रुत ने उदान वायु = पवनोत्तम कहा हैं।
- विशेषात् जीवितं प्राण उदानो बलमुच्यते। (अ ह .नि 16/56)
- आचार्य सुश्रुतानुसार प्राण, अपान और समान – इन तीनों प्रकार की वायुओं से जठराग्नि प्रदीप्ति होती हैं।

www.ayurvedpg.com

पित्त के भेद

पित्त के भेद	स्थान	कर्म
1. पाचक	पक्वामाशय मध्य – (सुश्रुत, वाग्भट्ट) **अग्नाशय –(शारंर्गधर)।**	चतुर्विधमन्नपानं **पचति विवेचयति** च दोषरसमूत्रपुरीषणिः। **पाचन,** दोष, रस, मूत्र व पुरीष का पृथक्करण।– (सुश्रुत) शेष पित्तों को स्वस्थान पर बल देना **पचत्यन्नं विभजते सारकिट्टौ पृथक् तथा। –(वाग्भट्ट)।**
2. रंजक	यकृत प्लीहा – सुश्रुत, यकृत **–शारंर्गधर** **अमाशयाश्रयं** पित्तं रंजक रसरंजनात्। (वाग्भट्ट)	रस धातु का रंजन कर रक्त निर्माण करना।
3. साधक	हृदय	बुद्धि, मेधा, अभिमान, उत्साह, प्रसन्नता।
4. आलोचक	नेत्र	दर्शन।
5. भ्राजक	त्वचा	त्वचा का प्रकाशन, प्रभा, ताप नियंत्रण करना। अभ्यंग, परिषेक, आलेप आदि का पाचन।

✓ भेल के अनुसार आलोचक पित्त के 2 भेद होते हैं –

1. चक्षुवैशेषिक – चक्षु में   2. बुद्धिवैशेषिक – श्रृंगाटक में।

✓ आचार्य 'डल्हण'' के अनुसार ''ओज एवं साधक पित्त'' एक ही है।

✓ शारंर्गधर ने पाचकपित्त की मात्रा 'तिल प्रमाण' बताई है और उसका स्थान अग्नाशय बतलाया हैं।

कफ के भेद

कफ के भेद	स्थान	कर्म
1. क्लेदक	आमाशय	अन्न का क्लेदन, अन्य कफो की वृद्धि करना।
2 अवलम्बक	उरः (वक्षस्थल), त्रिक प्रदेश	त्रिकसंधारण व हृदय का अवलम्बन।
3. बोधक	रसना – (वाग्भट्ट), जिह्वामूल, कण्ठ – (सुश्रुत)	रस बोधन।
4. तर्पक	शिर	शिरस्थित इन्द्रियों का तर्पण।
5. श्लेष्मक	सन्धि	संधि संश्लेषण।

✓ कफ के 5 भेदों का सर्वप्रथम पृथक्–पृथक् वर्णन – अंष्टांग हृदय सूत्रस्थान में दोषभेदीय अध्याय 12 में किया है।

www.ayurvedpg.com

✓ **चरकानुसार अकुपित शरीर चर वायु के कार्य :– (च. सू. 12/2)**

1. **वायुस्तन्त्रयन्त्रधर** – शरीररूपी यन्त्र का धारण करने वाला है (तन्त्र =शरीर, यंत्र = शरीरायव)
2. **प्राणोदानसमानव्यानापानात्मा** – प्राण, उदान, समान, व्यान और अपान – इन पांचो वायुओं की आत्मा है।
3. **प्रर्वतकश्चेष्टामुच्चावचानां** –
4. **नियन्ता प्रणेता च मनसः** – **वात मन का नियंत्रक और प्रेरणा देने वाला है।**

   मन का नियत्रण वायु के द्वारा होता है और मन का निग्रह स्वंय मन के द्वारा होता हैं
5. **सर्वेन्द्रियाणामुद्योजकः** – **वात समस्त इन्द्रियों को उनके विषयों में प्रेरित करता है।**
6. **सर्वेन्द्रियार्थानामभिवोढा** – वात सम्पूर्ण इन्द्रियों के विषय को वहन करने वाला है।
7. **सर्वशरीरव्यूहकरः** –
8. सन्धाकरः शरीरस्य – शरीर का संधानकर अर्थात् जोडने वाला वात है।
9. प्रवर्तको वाचः – वाणी को प्रवृत्त करने वाला है।
10. दोष संशोषण – शरीर में उत्पन्न क्लेद आदि दोषों को नष्ट करता है।
11. कर्तागर्भाकृतीनाम् – गर्भ की आकृति को बनाने वाला वात है।
12. **आयुषोऽनुवृत्ति प्रत्ययभूतो** – **वात ही आयु के अनुवर्तन, परिपालन का कारण है।**

✓ **वातलाद्याः सदातुराः। – (च. सू. 7/40) वातिकाद्याः सदाऽऽतुराः। – (काश्यप लेह्याध्याय)**

✓ **सर्वा हि चेष्टा वातेन स प्राणः प्राणिनां स्मृतः। (च. सू. 17/118)**

✓ **वायुरायुर्बलं वायुर्वायुर्धाता शरीरिणाम्। (च. चि. 28/2)**

✓ **प्रधानता – पित्तं पङ्गु कफः पङ्गुः पङ्वो मलधातवः। वायुना यत्र नीयन्ते तत्र गच्छन्ति मेघवत।**

(शा. पू. 5/25)

तीनों दोषों में वात प्रधान है। क्योकि पित्त और कफ दोष पङ्गु होते है। वात की गति के द्वारा ही दोनों गति कर पाते है जैसे हवा की गति के कारण बादल गति कर पाते है।

✓ **"वाताद् ऋते नास्ति रुजा।" – सुश्रुत**

✓ वार्योविद ने – वात को, मरिच ने – पित्त को, काप्य ने – कफ को शरीर का मूल रक्षक कहा हैं।

✓ चरकानुसार 'ज्ञान–अज्ञान' में कौनसा दोष कफ उत्तरदायी है।

✓ प्राण वायु, तर्पक कफ एवं मज्जा धातु तीनों का कर्म – **'पूरण'** है।

✓ **'विवेक'** समान वायु का प्रकृतिस्थ गुण कहा गया है।

✓ **'उद्‌वहन'** उदान वायु का प्रकृतिस्थ गुण कहा गया है।

✓ आचार्य सुश्रुत ने प्राण वायु = श्रेष्ठ वायु और उदान वायु = पवनोत्तम कहा हैं।

✓ विशेषात् जीवितं प्राण उदानो बलमुच्यते। (अ ह .नि 16/56)

✓ आचार्य सुश्रुतानुसार प्राण, अपान और समान – इन तीनों प्रकार की वायुओं से जठराग्नि प्रदीप्ति होती हैं।

✓ **दूषणात् दोषाः धारणात् धातवः मलीनिकरणात् मलाः। – (शारंग्धर)**

✓ **दोषा एव हि सर्वेषां रोगाणामेककारणम् – (अष्टांग हृदय सू. 12)**

✓ तरतम भेद से त्रिदोष के भेद – 63 (वाग्भट्ट, सुश्रुत, काश्यप), 62 (चरक)

✓ ऋग्वेद में त्रिदोष के लिए 'त्रिधातु' शब्द आया है

क्योकि दोष साम्यावस्था में धातु की तरह व्यवहार करते है

✓ त्रिस्तम्भ/त्रिस्थूण – वात पित्त, कफ

त्रिउपस्तम्भ – आहार, निद्रा, बह्मचर्य।

त्रिसूत्र/त्रिस्कन्ध – हेतु, लिंग, औषध

स्कन्धत्रय – हेतु, दोष, द्रव्य

www.ayurvedpg.com

"धातु–उपधातु"

निरूक्ति – धारणात् धावतः। (शांगर्धर)

परिभाषा – धारण + पोषण दोनो कार्य करे वह 'धातु' है। जो केवल धारण करे वह 'उपधातु' है। – (चक्र.)

शरीरधारणात् धातव इत्युच्यन्ते। (सु.सू. 14/20) – धातुए शरीर को धारण करती हैं इसलिए इन्हे धातु कहते है **धातु**

प्रकार :– (1) पोषक धातु – (सूक्ष्म अंश) (2) पोष्य धातु – स्थूल अंश।

✓ धातु और मल को दूष्य माना है। – अरूणदत ने

✓ रक्त को दोष और दूष्य माना है। – सुश्रुत, अष्टांग, संग्रह ने

✓ **'आर्तव' को अष्टम धातु माना है। – भावमिश्र ने।**

✓ **'ओज' को अष्टम धातु माना है। – चक्रपाणि ने।**

धातु भेद	प्रमाण	मुख्य कर्म	अन्य कर्म (सु.)
1. रस	9 अंजली	प्रीणन P	तुष्टि, रक्तपुष्टि।
2. रक्त	8 अंजली	जीवन G	वर्णप्रसादन, मांसपुष्टि।
3. मांस	–	लेपन L	**शरीरपुष्टि**, मेदपुष्टि।
4. मेद	2 अंजली	स्नेहन S	स्नेहन, स्वेदन, **दृढत्व**, अस्थिपुष्टि।
5. अस्थि	–	धारण	मज्जापुष्टि।
6. मज्जा	1 अंजली	पूरण	प्रीति, **बल**, स्नेह, शुक्रपुष्टि।
7. शुक्र	½ अंजली	गर्भोत्पादन	प्रीति, **देहबल**, हर्ष, धैर्य, च्यवन।

➢ **चरकानुसार शरीर में रसादि का अंजलि प्रमाण (अंजलि = 16 तोला = 192 ग्राम)**

क्र	धातु	मात्रा (अंजलि प्रमाण)
1.	उदकम् (जल, स्वेद)	10 अंजलि
2.	श्रस	9 अंजलि
3.	रक्त	8 अंजलि
4.	पुरीष	7 अंजलि
5.	कफ	6 अंजलि
6.	पित्त	5 अंजलि
7.	मूत्र, आर्तव (स्त्री)	4 अंजलि
8.	वसा	3 अंजलि
9.	मेद, स्तन्य	2 अंजलि
10.	मज्जा	1 अंजलि
11.	मस्तिस्क, शुक्र, अपर ओज	½ अंजलि
14.	पर ओज	8 बिन्दु (अरूणदत्त – 6 बिन्दु)

➢ सुश्रुत ने दोष, धातु, मलों का निश्चित (अंजलि) प्रमाण नहीं बताया है।

धातु	भावप्रकाश के अनुसार	डल्हण के अनुसार	वर्ण
1. रस	जल	जल	श्वेत
2. रक्त	**अग्नि**	**पंचमहाभूत**	रक्त
3. मांस	पृथ्वी	पृथ्वी	रक्त
4. मेद	जल + पृथ्वी	जल + पृथ्वी	श्वेत
5. अस्थि	**पृथ्वी + वायु + आकाश**	**पृथ्वी + वायु**	श्वेत
6. मज्जा	सोम	जल	रक्त
7. शुक्र	सोम	जल	शुक्ल

उत्पत्ति :– रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान्मेदः प्रजायते। मेदसोऽस्थि ततो मज्जा मज्ज्ञः शुक्रं तु प्रजायते। (सु.)

रस से रक्त, रक्त से मांस, मांस से मेद, मेद से अस्थि, अस्थि से मज्जा एवं मज्जा से शुक्र की उत्पत्ति होती है

www.ayurvedpg.com

1. रसधातु

निरूक्ति – तत्र 'रस' गतौ धातुः। अहरहर्गच्छतीत्यतो रसः। (सु. सु. 14/13)

उत्पत्ति – **आहारस्य रसः सारः** सार हीनो मलद्रवः। (भा. पू. 3/172)

गुण – रस सौम्य है।

कर्म – तर्पयति, वर्द्धयति, धारयति, यापयति। (सु. सु. 14/3)

✓ (1) **रसजं पुरूषं विद्यात्। (सु. सू. 14/12)**

✓ (2) रस धातु के 2 भेद – **(1) स्थायी रस, (2) पोषक रस** – चक्रपाणि ने बताए है।

✓ (3) रस धातु के 3 भेद – **(1) स्थूलांश (2) सूक्ष्मांश (3) मलांश** – भावप्रकाश ने बताए है।

✓ (4) रस का संवहन – रस धातु का स्थान हृदय है, वहां से **व्यान वायु** द्वारा रस का परिभ्रमण 24 धमनियों से सर्व शरीर में होता है। ऊर्ध्व – 10, अधः – 10 और 4 तिर्यक।

(1) शब्द अन्तान वत (2) अर्चि सन्तानवत (3) जलसंतानवत।

(5) स्थौल्य एवं कार्श्य – **रस निमित्तमेव स्थौल्यं कार्श्यं च। (सु. सू. 15/32)**

सुश्रुतानुसार स्थौल्य और कार्श्य विशेषतः आहार रस पर निर्भर है।

देहवृत्तौ यथाऽऽहारस्तथा स्वप्नः सुखो मतः। स्वप्नाहारसमुत्थे च स्थौल्यकार्श्ये विशेषतः। (च.सू. 21/51)

चरकानुसार स्थौल्य और कार्श्य विशेषतः आहार एवं स्वप्न पर निर्भर है।

2. रक्त धातु

निरूक्ति – रस रंजने, तेनरंजन रागवर्णयुक्त, रागकृतं च धातु रक्तम् इति अर्थो भवति।

उत्पत्ति – तेजो रसानां सर्वेषां मनुजानां यदुच्यते। पित्तोश्मणः स रागेण रसो रक्तत्वमृच्छति। (च. चि. 15/28)

स खल्वाप्यो रसो **यकृतप्लीहानौ** प्राप्य रागमुपैति। (सु. सु. 14/4)

रस धातु का यकृत प्लीहा में रंजन हो जाने पर रक्त प्राप्त होता है।

गुण – रक्त धातु ही एक मात्र धातु है जो पाञ्चमहाभौतिक होती है – सुश्रुत

विस्त्रता द्रवता रागः स्पन्दनं लघुता तथा। भूम्यादीनां गुणा ह्येते दृश्यन्ते चात्र शोणिते। (सु. सू. 14/9)

1. विस्रता (पृथ्वी) 2. द्रवता (जल) 3. अग्नि (राग) 4. स्पंदन (वायु) **5. लघुता (आकाश)।**

1. विस्रता (पृथ्वी) 2. द्रवता (जल) 3. अग्नि (राग) 4. चलन (वायु) **5. विलय (आकाश) –शांरर्ग्धर**

कर्म – 1. **रक्तवर्ण प्रसादं मांसपुष्टि जीवयति च।** (सु. सू. 15/5)

2. तद्विशुद्धं हि रूधिरं **बलवर्ण सुखायुषा।** युनक्ति प्राणिनं प्राणः शोणितं ह्यनुवर्ततो।। (च.सू. 24/4)

3. लोहितं प्रभवः शुद्धं तनोस्तेनैव च स्थितिः। (अ. ह. सू. 27/2)

(1) परिभाषा :– रक्त की परिभाषा दी है – सुश्रुत ने दी हैं।

"रंजितास्तेजसा त्वापः शरीरस्थेन देहिनाम्। अव्यापन्नाः प्रसन्नेन रक्तमित्यभिधीयते।।" (सु. सू. 14/5)

(2) **विशुद्ध रक्त** – विशुद्ध रक्त का स्वरूप – सर्वप्रथम चरक ने बतलाया हैं।

1. तपनीयेन्द्रगोपाभं पद्मालक्तक सन्निभम्। गुन्जाफल सवर्ण च विशुद्धं विद्धि शोणितम्। (च. सू 24/22)

2. इन्द्रगोपाकप्रतीकाशमसंहतमविवर्ण च प्रकतिस्थं जानीयात्। (सु.सू. 14/22)

(1) इन्द्रगोप (वीरबहूटी) के वर्ण का (2) विविध वर्ण (3) असंहत (गाढ़ा)।

3. मधुरं लवणं किंचितशीतोष्णमसंहतम्। पद्मेन्द्रगोपहेमाविशशलोहित लोहितम्।। (अ.ह.सू. 27/1)

शुद्ध रक्त मधुर, कुछ लवण रस वाला, अशीतोष्ण और द्रवरूप होता है।

(3) **रक्तज विकारों का अनुपशय ज्ञान :–** रक्तज रोगों का निदान **"अनुपशय"** से होता है।

(4) **महिमा :– देहस्य रूधिरं मूलं रूधिरेणैव धार्यते। तस्मात् यत्नेन संरक्ष्यं रक्तं जीव इति स्थिति। (सु.सू. 14/44)**

(5) **तेषां क्षयवृद्धी शोणितनिमित्ते (सु. सू. 14/21)** – धातुओ की क्षीणता और वृद्धि मे मूल कारण "रक्त" ही है।

www.ayurvedpg.com

3. मांस धातु

उत्पत्ति – 1. 'रसात् रक्तं ततो मांसम्.................. (च. चि. 15/16)

रस से रक्त, तदन्तर रक्त से मांस की उत्पत्ति होती है।

2. वाय्वम्बुतेजसा रक्तमूष्मणा चाभिसंयुतम्। स्थिरतां प्राप्यं मांसं स्यात्। (च. चि. 15/29)

रस व रक्त धातु द्रव रहती है। परन्तु वायु, जल एवं तेज की अग्निक्रिया से मांस धातु घनत्व को प्राप्त होती है।

कर्म – मासं शरीरपुष्टि मेदसश्च। (सु. सू. 15/5) – मांस धातु शरीर की एवं मेद धातु की पुष्टि करता है।

4. मेद धातु

उत्पत्ति – 1. मांसान्मेदः प्रजायते। – (सु. सू. 14/10) – मांस धातु से मेद धातु की उत्पत्ति होती है।

अथेतरेषु सर्वेषु सरक्तं मेद उच्यते। – स्थूलास्थियों में मज्जा होती है शेष सभी अस्थियों में सरक्त मेद होती है।

कर्म – मेदः स्नेहस्वेदौ दृढत्वं पुष्टिमस्थ्नां च – अंग–प्रत्यंगों एवं समस्त शरीर का स्नेहन करना, उन्हें दृढ करना और स्वेद को उत्पन्न करना तथा अस्थि धातु की पुष्टि करना – ये सभी मेद धातु के कार्य है।

5. अस्थि धातु

उत्पत्ति – 1. मेदसोऽस्थि ......जायते। – **(सु. सू. 14/10)** – मेदो धातु से अस्थि धातु की उत्पत्ति होती है।

कर्म – अस्थिानि देहधारणं मज्ज्ञः पुष्टिं च। – (सु. सू. 15/5) देह धारण और मज्जा धातु की पुष्टि करना।

6. मज्जा धातु

उत्पत्ति – ततो अस्थ्नः मज्जा ..... जायते। (सु.सू. 14/11) – अस्थि धातु से मज्जा धातु की उत्पत्ति होती है।

स्थूलस्थिषु विशेषेण मज्जा त्वभ्यन्तराश्रितः। (सु.शा. 4/12)– स्थूलास्थियों में मध्य में विशेष रूप मज्जा होती है।

कर्म – मज्ज स्नेहं बलं शुक्रपुष्टिं पूरणमस्थ्नां च करोति। (सु. सू. 15/6) –शरीर में प्रसन्नता, बल प्रदान करना, शुक्र धातु की पुष्टि करना और अस्थियों का पूरण करना – ये सभी मज्जा धातु के कर्म है।

✓ **मस्तिष्कशिरस्थो मज्जा, मस्तिष्कः शिरोगतः स्नेहः। (चक्रपाणि)**

✓ **मस्तुलुगों विलीनघृताकारो मस्तकमज्जा। (डल्हण)**

7. शुक्र धातु

उत्पत्ति – मज्ज्ञः शुक्रं तु जायते। (सु. सू. 14/10) – मज्जा धातु से शुक्र धातु की उत्पत्ति होती है।

आहारस्य परं धाम शुक्रं तद्रक्ष्यमात्मनः। क्षयो ह्यस्य बहून रोगान् मरणं वा नियच्छति। (च. नि. 6/9)

✓ शुक्र ही आहार का परम धाम (सर्वश्रेष्ठ परिणाम) है।

✓ चरतो विश्वरूपस्य रूपद्रव्यं (च. चि. 2/पाद 4/49) – **शुक्र।**

कर्म – 1. शुक्रं धैर्य च्वयनं प्रीति देहबलं हर्ष बीजार्थ च। (सु. सू. 15/6)

2. शुक्रात् गर्भः प्रसादज। (च. चि. 15/16) – शुक्र से गर्भोत्पत्ति होती है।

–: शुद्ध शुक्र के लक्षण :–

1. चरक :– स्निग्ध घनं पिच्छिलं च मधुरं चाविदाहि च। रेतः शुद्धं विजानीयात् भवेत <u>स्फटिकसन्निभम्।</u>

(च. चि. 30)

2. सुश्रुत :– स्फटिकाभं द्रव स्निग्ध मधुरं मधुगन्धि च। शुक्रमिच्छन्ति केचित्तु <u>तैलक्षौद्रनिभं</u> तथा।।

(सु. शा. 2/13)

3. वाग्भट्ट :– शुक्रं शुक्लं गुरू स्निग्धं मधुरं बहल बहु। <u>घृतमाक्षिक तैलाभं</u> सद् गर्भाय – (अ. ह. शा. 1/16)

1. शुक्लवर्ण	= चरक, वाग्भट्ट	3. तैलक्षौद्रनिभं	= सुश्रुत	5. विस्त्र गंधि	= चरक
2. स्फटिकाभ	= चरक, सुश्रुत	4. घृतमाक्षिक तैलाभं	= वाग्भट्ट	6. मधुराग्धि	= सुश्रुत

www.ayurvedpg.com

धातु प्रदोषज	चिकित्सा
1. रस	लंघन। **(रसजानां विकाराणां सर्व लंघनमौषधम्)**
2. रक्त	कुर्यात् शोणितरोगेषु **रक्तपित्तहरीं क्रियाम्।** विरेकमुपवासश्च स्रावणं शोणितस्य च।। रक्तपित्तहर चिकित्सा, विरेचन, उपवास या रक्तमोक्षण।
3. मांस	**मांसजानां तु संशुद्धिः शस्त्रक्षाराग्निकर्म च।** – संशोधन, शस्त्र, अग्नि, क्षारकर्म।
4. मेद	**अष्टौनिन्दितिकेऽध्याये मेदोजानां चिकित्सतम्।** – अष्टनिन्दित रोग चिकित्सा
5. अस्थि	**अस्थ्याश्रयाणां व्याधिनां पंचकर्माणि भेषजम्।** – पन्चकर्म विशेषकर वस्ति, तिक्त साधित क्षीरसर्पि
6. मज्जा	व्यवाय, व्यायाम, यथाकाल संशोधन, मधुर, तिक्त, औषध और अन्न सेवन।
7. शुक्र	व्यवाय, व्यायाम, यथाकाल संशोधन, मधुर, तिक्त, औषध और अन्न सेवन।

धातु पोषण क्रम न्याय	प्रवर्तक	पर्याय
1. क्षीर दधि न्याय	दृढ़बल	सर्वात्म परिणाम पक्ष, क्रम परिणाम पक्ष।
2. केदारीकुल्या न्याय	सुश्रुत	अशांश परिणाम पक्ष।
3. खले कपोत न्याय	भाव प्रकाश	पृथक परिणाम पक्ष।
4. एककाल धातु पोषण	अरूणदत्त	एक ही समय में समस्त धातु निर्माण

चरक – क्षीर दधि न्याय के **समर्थक**
सुश्रुत – खले कपोत न्याय के **समर्थक**
वाग्भट्ट – एककाल धातु पोषण न्याय के **समर्थक**
भावप्रकाश – केदारीकुल्या न्याय के **समर्थक**

रस से शुक्र और आर्त्तव की उत्पत्ति :–

✓ एवं **मासेन रसः शुक्रो भवति स्त्रीणां च आर्तवम् – (सु. सु. 14/15)**
अतः रस → शुक्र/आर्तव निर्माण में – 1 माह का समय लगता है। –– (सुश्रुत)

✓ **अष्टादशसहस्राणि संख्या ह्यस्मिन् समुच्चये। कलानां नवतिः प्रोक्ता स्वतन्त्रपरतन्त्रयोः। (सु. सु. 14/16)**
रस प्रत्येक धातु में 3015 कला (110 घंटा) रूकता है और 1 मास में रस से शुक्र पर्यन्त धातु बनती है।
अतः रस → शुक्र निमार्ण में – 18090 कला (1 माह – 720 घण्टे) का समय लगता है। – (सुश्रुत)

✓ **षड्भिः केचिदहोरात्रैरिच्छन्ति परिवर्त्तनम्। (च. चि. 15/20)**
रस → शुक्र निर्माण में → 6 अहोरात्र (6 रात दिन) का समय लगता है। – (चरक)

"उपधातु"

उपधातु :– धारणात् पोषणाच्च धातवः उपधातुस्तु धारणादेव। (चक्रपाणि)
परिभाषा – धारण + पोषण दोनो कार्य करे वह 'धातु' है और जो केवल धारण करे वह 'उपधातु' है। – (चक्र.)
सिरास्नायुरजःस्तन्यत्वचो **गतिविवर्जिताः।** धातुभ्यश्चोपजान्यन्ते **तस्मात्त उपधातवः।** (चक्रपाणि)

धातु	उपधातु (चरक)	उपधातु (डल्हण)	उपधातु (शांरर्ग्धर)	
1. रस	स्तन्य, आर्तव	स्तन्य, आर्तव	स्तन्य	S
2. रक्त	कण्डरा, सिरा	कण्डरा, सिरा	आर्तव	A
3. मांस	वसा, षडत्वचा	वसा, षडत्वचा	मांस स्नेह	M
4. मेद	स्नायु	स्नायु, **संधि**	प्रस्वेद	Pai
5. अस्थि			दन्त	D
6. मज्जा			केश, रोम	Cass, Rupee
7. शुक्र			'ओज'	Oja

www.ayurvedpg.com

1. स्तन्य

स्तन्य :— रसप्रसादो मधुरः पक्वाहार निमित्तजः। कृत्स्नदेहात स्तनौ प्राप्तः स्तन्यमित्यभिधीयते। (सु. नि. 10/18)
परिपक्व आहार के पाक के प्रसादांश जो मधुर रस है वह शरीर के स्तनों में प्राप्त होने पर स्तन्य कहलाता है
कर्म :— स्तन्यं स्तनयोरापीनत्वजननं जीवनं चेति।

2. आर्त्तव

आर्तव :— **रसादेव स्त्रिया रक्तं रजः संज्ञं प्रर्वत्तते। तद्ववर्शाद् द्वादशादूर्ध्वं याति पंचाशतः क्षयम्। (सु. सू. 14/6)**
रजोदर्शन :— काश्यप = 16 वर्ष, सुश्रुत, वाग्भट्ट, चरक = 12 वर्ष।
रजोनिवृत्ति :— सुश्रुत, चरक, वाग्भट्ट = 50 वर्ष।

3. कण्डरा

कण्डरा :— प्रसरणाऽऽकुन्चनयोरगांनां कण्डरा मता।
— अंगो के प्रसारण व आकुचंन में कण्डरायें कारण मानी जाती है
✓ **'महत्यः स्नायवा प्रोक्ता कण्डरास्तासु षोडशः।' — (भावप्रकाश)**

4. सिरा

सिरा :— सन्धिबन्धनकारिण्यो **दोषधातुवहाः** सिराः। (शा. पू. 5/60)

5. वसा

वसा :— शुद्धमांसस्य यः स्नेहः सा वसा परिकीर्त्तिका। (सु. शा. 4/12) — शुद्ध मांस के स्नेह को वसा कहते है।

6. त्वचा

त्वचा :— "तत्रासृजः पच्यमानस्य क्षीरस्येव सन्तानिकाः षट् त्वचो भवन्ति। —(अ. हृ. शा. 5/24)
त्वचा गर्भाशय में शुक्र शोणित के पचने पर उत्पन्न होती है। निर्माण :— रक्त धातु से।

7. स्नायु

स्नायु :— मेदसः स्नायुसम्भवः। (च. चि. 15/17) — मेद स्नेह का पित्त की से उष्मा व वायु द्वारा खरपाक होने पर स्नायु की उत्पत्ति होती है।
सुश्रुत संहिता में 'उपधातु' का वर्णन नहीं किया है किन्तु उनके कार्यो का वर्णन किया है।
रक्तलक्ष्मणम् आर्त्तवं गर्भकृच्च गभो गर्भलक्षणम्। स्तन्यं स्तनयोरापीनत्वजननं जीवनं चेति। (सु. सू. 15/9)

"ओज"

परिभाषा :—

1. **चरक — प्रथम** जायते ह्ययोजः शरीरेऽस्मिन् शरीरिणाम्। (च. सू. 17/75)
2. **सुश्रुत — रसादीनां शुक्रन्तानां** धातुनां यत् परं तेजस्तत् खल्वोजः तदेव **बलं** इत्युच्यते। (सु. सू. 15/24)
3. **वाग्भट्ट —** ओजस्तु **तेजोधातुनां शुक्रान्तानां** परं स्मृतम्। (अ. ह. सू. 11)

ओज सम्बन्धी मत—मतान्तर —

(1) चरक — रस — रसश्चौजः संख्यात (च. नि. 4/7)
गर्भरस — यत्सारमादौ गर्भस्य यद् तद् **गर्भरसाद्रसः** संवर्तमानं ह्रदयं समाविशति यत् पुरा। (च. सू. 30/9)
प्राकृत श्लेष्मा —प्राकृतास्तु बलं श्लेष्मा विकृतो मल उच्यते। स चैवोजः स्मृतः काये स च पाप्मोपदिश्यते। (च. सू 17)
(2) चक्रपाणि — अष्टम धातु।
(3) अ. ह्रदय — शुक्र का मल।
(4) शारंर्ग्धर — शुक्र की उपधातु।
(5) भावप्रकाश — सर्वधातूनां स्नेहमोजः, क्षीरेघृतमिव।
(6) डल्हण — **जीवशोणितम् —** तत्रान्तरे तु ओजः शब्देन रसोऽपि उच्यते। **जीवशोणित**मपि ओजः शब्देनामनन्ति।

उत्पत्ति :— भ्रमरैः फलपुष्पेभ्यां यथा संहियते मधु। तद्वदोजः शरीरेभ्यो गुणैः संभ्रियते नृणाम्। — (च. सू. 17/76)
जिस प्रकार भौरे फल एवं पुष्पों से मधु एकत्रित करते है। उसी तरह शरीर में धात्वाग्नि अपने गुण कर्मो द्वारा धातुओं से ओज को एकत्रित करती है।

www.ayurvedpg.com

ओज का स्वरूप :– सर्पिवर्ण मधुरस लाजागन्धि प्रजायते। च. सू. (17/75)

गर्भस्थ ओज – **1. वर्ण –** सर्पि (घृत) वर्ण, **2. रस –** मधु के समान, **3. गंध –** लाजा सदृश्य।

हृदयस्थ ओज –हृदि तिष्ठति यच्छुद्धं रक्तमीषत्सपीतकम्। ओजः शरीरे संख्यातं तन्नाशान्ना विनश्यति।

(च.सू. 17/74)

(1) चरक – रक्तमीषत्सपीतकम्। (2) सुश्रुत – शुक्लपीताभ (3) वाग्भट्ट – ईषत् लोहितपीत।
(4) काश्यप – अश्याव रक्तपीतकम्। (5) चक्रपाणि – श्वेतवर्ण। (6) डल्हण – श्वेत, तैल, क्षौद्र वर्ण।

ओज के भेद – 2 भेद होते है (चक्रपाणि)।

(1) अपर ओज – सर्वशरीर व्याप्त – 1/2 अंजलि प्रमाण – कफज स्वरूपवाला।
(2) पर ओज – हृदय स्थित – अष्ट विन्दु प्रमाण – पित्तज स्वरूपवाला।

✓ अरूणदत्त ने पर ओज की मात्रा 6 बिन्दु बतलाई है।

आचार्य डल्हण ने वर्ण के आधार पर ओज 3 भेद मानते हैं। –

1. श्वेत वर्ण
2. तैल वर्ण
3. क्षौद्र वर्ण

ओज का स्थान – आचार्य भेल ने ओज के 12 स्थानों का वर्णन किया है।

त्वक्, शोणित, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्ल, स्वेद, मूत्र, पुरीष, श्लेष्म और पित्त।

सर्वदेह – देहः सावयवस्तेन व्याप्तो भवति देहिनः। **तद् अभावाच्च शीर्यन्ते शरीराणि शरीरिणाम्।**

(सु. सू. 15/22)

हृदय – तत्पस्यौजसः स्थानं तत्र चैतन्यसंङ्ग्रहः। – पर ओज का स्थान हृदय है। **(च. सू. 30/7)**

ओज के 10 गुण :–

1. **गुरू** शीत मृदु **श्लक्षण बहल मधुरं** स्थिरम्। **प्रसन्न पिच्छिलं** स्निग्धं ओजो दश गुण स्मृत्।। (च. चि. 24/31)
2. ओजः **सोमात्मकं** स्निग्धं **शुक्लं** शीतं स्थिरं **सरम्। विविक्तं** मृदु **मृत्स्नं** च **प्राणायतनमुत्तमम्**।। (सु. सू. 15/26)

ओज के कार्य – तत्र बलेन स्थिरोपचितमांसता, सर्वचेष्टास्वप्रतिघातः, स्वरवर्णप्रसादो बाह्ययानामाभ्यन्तराणां च करणानाम् आत्मकार्य प्रतिपत्तिः भवति। (सु. सू. 15/20)

सुश्रुतानुसार ओज क्षय के कारण – (7) – अभिघात, क्षय, क्रोध, शोक, ध्यान, परिश्रम और अनशन।

ओज विकृतियां – 3	**त्रिस्त्रंस, व्यापत, क्षय के लक्षण**
1. विस्रंस	सन्धिविश्लेषो, गात्राणां सदनं, **दोष च्यवनं,** क्रियाऽसन्निरोधश्च।
2. व्यापत्	स्तब्धगुरूगात्रता, वातशोफ, वर्णभेद, ग्लानि, तन्द्रा, निद्रा।
3. क्षय	मूर्च्छा, मांसक्षय, मोह, प्रलापं, मरण।
बल विकृतियां – 3	**त्रिस्रंसन, व्यापत, क्षय के लक्षण**
1. विस्रंस	विश्लेषसादौ गात्राणां, दोषविस्रंसनं श्रमः। **अप्राचुर्य क्रियाणां च बलविस्रंसलक्षणम्।**
2. व्यापत्	गुरूत्वं स्तब्धताऽंगेषु, ग्लानिर्वर्णस्य भेदनम्। तन्द्रा निद्रा वातशोफो बलव्यापदि सलक्षणम्।
3. क्षय	मूर्च्छा मांसक्षयो, मोहः प्रलापोऽ**ज्ञानमेव** च। पूर्वोक्तानि च लिंगानि मरणं च बलक्षये।

ओजक्षय :– ''विभेति दुर्बलोऽभीक्ष्णं ध्यायति व्यधितेन्द्रियः। दुश्छायो दुर्मना रूक्षः क्षामश्चैव ओजसःक्षये।।''

मनुष्य भयभीत रहता है, दुर्बल हो जाता है, सदैव चिन्तित और ध्यान मग्न रहता है, इन्द्रियां व्यथित रहती है क्रान्ति मलिन, मन उदास रहता है और शरीर रूक्ष एंव कृश हो जाता है।

www.ayurvedpg.com

—: मल :—

धातु	मल (चरक)	मल (वाग्भट्ट)	(सुश्रुत, शारंग्धर)	मल (शारंग्धर)
1. रस	कफ	कफ	कफ	जिह्वा, नेत्र, कपोलगत जल।
2. रक्त	पित्त	पित्त	पित्त	**रंजक पित्त।**
3. मांस	खमल	खमल	खमल	कर्णविड।
4. मेद	स्वेद	प्रस्वेद	प्रस्वेद	जिह्वा, दन्त, कक्षा, मेढ्र का मल।
5. अस्थि	**केश, लोम**	**नख, रोम**	**नख, रोम**	नख
6. मज्जा	अक्षिविट्, त्वकस्नेह	नेत्र, त्वकस्नेह	नेत्र, त्वकस्नेह	नेत्रमल।
7. शुक्र		**ओज**		मुखस्निग्धता, **पिटिका (श्मश्रु –डल्हण)**

मल :– मलिनीकरणाद् आहारमलत्वान्मलाः। (अ. सं सू. 20/3)

जो शरीर को मलिन करे तथा आहार के किट्ट भाग से उत्पन्न हो उन्हे मल कहते है।

मलिनीकरणान्मलाः। (शांगर्धर), मल – दूष्य माना (अरूणदत्त)।

मल	अंजली प्रमाण	महाभूत (वा.)	कर्म
1. पुरीष	7 अंजली	पृथ्वी + जल	**पुरीषम् उपस्तभं वाय्वग्निधारणं च। (सुश्रुत)** उपस्तंभ (सुश्रुत), अवस्तंभ (वाग्भट्ट)
2. मूत्र	4 अंजली	जल + अग्नि	**वस्तिपूरण विक्लेदकृत मूत्रम्। (सुश्रुत)** (विक्लेदकृत – क्लेद का वहन करता है)
3. स्वेद	10 अंजली	अग्नि + जल	**स्वेदः क्लेद त्वकसौकामार्यकृत। (सुश्रुत)** (क्लेदत्वम् – क्लेद का धारण करना)

—: (1) पुरीष :—

1. पयार्य :– शकृत, मल, किट्ट, शमल, वर्च, **उच्चार, उपवेशन**, विष्णअवस्कर।

2. पुरीष निर्माण प्रक्रिया का वर्णन – वाग्भट्ट ने किया है

3. पुरीष की उत्पति – किट्ट सारश्च तत् पक्वम् अन्नम् संभवति द्विधा।

तत्र अच्छं द्विद्धम् अनस्य मूत्रं विधात घनं शकृत। (अं ह. सू. 3/16)

अन्न के पाचन पश्चात् दो भाग बनते है प्रथम सार दूसरा किट्ट भाग। किट्ट भाग के 2 भाग हो जाते है

(1) अच्छ (तनु) भाग से – मूत्र (2) घन भाग से– पुरीष। का निर्माण होता हैं।

4. **समान वायु का कर्म :–** पचति अन्न विभजते सारकिट्टों पृथक तथा। – सार–किट्ट का पृथक्करण करना।

5. पुरीष की उत्पत्ति – पक्वाशय में होती है, **पुरीष धराकला –** पच्चमी होती है।

6 गुद के भेद :– उत्तरगुदं यत्र पुरीषम अवतिष्ठते येनु तु पुरीष निष्क्रमति तत् अधर गुदम। (चक्रपाणि)

—: (2) मूत्र :—

1. पर्याय – मूत्र, मेह, वस्तिमल, नृजलभ, प्रस्त्राव, स्त्रव। मूत्र – किट्टम् अन्नस्य विण्मूत्रम्। (च.चि)

2. मूत्र निर्माण प्रक्रिया का वर्णन – सुश्रुत ने किया है। मूत्र निर्माण प्रक्रिया – 'पक्वाशय' में शुरू होती है

मूत्रोपत्ति **– पक्वाशसय गतास्यत्र नाड्योमूत्रवहास्तः याः। (सु. नि. अ. 321)**

3. 'मूत्र निर्माण प्रक्रिया का नियंत्रण' – पाचक पित्त करता है।'

4. कर्म – **1.** मूत्रस्य केलदवाहनम् (वा. सू. 11/5),

2. मूत्रं मानुषं च विषापहम्। (सु. सू. 45/220) 3. मानुष मूत्र तु विषापहम् । (अ. सं 6/148)

4. नरमूंत्र गरं हन्ति तद् विध सेवितम् रसायनम्। (भावप्रकाश)

—: (3) स्वेद :—

1. स्वेद निर्माण प्रक्रिया का वर्णन – भाव प्रकाश ने किया है

2. पर्याय – स्वेद, घर्म, निदाघ। (घर्मकाले, निदाघे – ग्रीष्म ऋतु एवं **घर्मान्ते – प्रावृट् ऋतु)**

3. कर्म – स्वेदस्य क्लेद विधृति (अ. ह. 12/5)

www.ayurvedpg.com

दोष धातु मल, क्षय, वृद्धि लक्षण

दोष	क्षय के लक्षण	वृद्धि के लक्षण
1. वात	मंदचेष्टता, अल्पवाक्यं, अप्रहर्ष, मूढ़ संज्ञता। – सुश्रुत। **अंगसाद – वाग्भट्ट**	वाकपारूष्यं, कार्श्य, कार्ष्ण्य, गात्रस्फुरण, उष्णकामिता, **निद्रानाश,** अल्पबल, गाढवर्चस्त्वं।
2. पित्त	पित्तक्षये मन्दोष्माग्निता, निष्प्रभत्व च। – सुश्रुत।	पीतावभासता, **सन्तापः**, शीतकामित्वं, **अल्पनिद्रता,** मूर्च्छा, बलहानि, इन्द्रिदौर्बल्य, पीतविण्मूत्रनेत्रता।
3. कफ	रूक्षता, **अर्न्तदाह,** आमाशय के अतिरिक्त अन्य श्लेष्माशय में शून्यता, **तृष्णा, दौर्बल्य, संधि शौथिल्य, प्रजागरण।**	शुक्लता, शैत्य, स्थिरता, गौरव, **अवसाद, अतिनिद्रा, तन्द्रा, संधिविश्लेष, अस्थिविश्लेष।**

1. रस	घट्टते सहते, शब्दं न उच्चै, शूल्यते। **हृदयं ताम्यति**, स्वल्पचेष्टास्यापि रसक्षये। – चरक। रसक्षये **हृत्पीड़ा,** कम्प, शून्यता, **तृष्णा** च। – सुश्रुत। रसे रौक्ष्यं श्रमः शोषो ग्लानिः **शब्दासहिष्णुता।** – (वा.)	रसोऽतिवृद्धो **हृदयोत्क्लेदं** प्रसेक च। रसोऽपि श्लेषमवत्। – (वा.)
2. रक्त	परूषा स्फुटिता म्लाना त्वग् रूक्षा रक्तसंक्षये। – चरक। शोणितक्षये त्वक्पारूष्यं **अम्लशीतप्रार्थना सिराशैथिल्य।** – सु रक्ते अम्लशिशिरप्राति शिरा शैथिल्य रूक्षता। – (वा.)	रक्तं रक्तांगक्षितां सिरापूर्णत्वं च। – सुश्रुत। विद्रधि, **प्लीह,** कुष्ठ, रक्तपित्त, उपकुश, **गुल्म,** कामला, व्यंग, **अग्निनाश।** – (वा.)।
3. मांस	मांसक्षये विशेषेण स्फिग्ग्रीवोदर शुष्कता। – चरक। + रूक्षता, तोद, सदन, **धमनी शैथिल्य। – सुश्रुत।** मांसे अक्षग्लानि गण्डस्फिक्शुष्कता, **संधिवेदना** –(वा.)	स्फिग, गण्ड, ओष्ठ, मुष्क, उरू, जंघा बाहु–वृद्धि गुरूगात्रता।
4. मेद	**संधिस्फुटन**, ग्लानि, नेत्रों में आलस्य, उदर का तनु होना – च. मेदःक्षये **प्लीहाभिवृद्धिः संधिशून्यता,** रौक्ष्यं, **मेदुरमांसप्रार्थना – सु.** मेदसि स्वपनं कट्याः **प्लीह्नो वृद्धिः** कृशागंता। – (वा.)	अंगों में स्निग्धता, उदर व पार्श्व वृद्धि, कास, श्वास, दुर्गन्ध, प्रमेह के पूर्वरूप।
5.अस्थि	**अस्थितोद,** केश, लोम, नख, श्मश्रु, द्विज–प्रपतन, **संधिशैथिल्य** – चरक।	अध्यस्थि, अधिदन्त।
6.मज्जा	अस्थियां – शीर्ण, दुर्बल, लघु, **प्रततं वातरोगीणि। – चरक।** मज्जक्षये **अल्पशुक्रता,** पर्वभेद **अस्थिनिस्तोद अस्थिशून्यता।**– सु. **अस्थिसौषिर्य,** श्रम, **तिमिरदर्शन – (अ. हृ)।** **तमोदर्शन – (अ.सं.)**	**मज्जा सर्वांगनेत्रगौरवं च।** – सुश्रुत। समस्त शरीर व नेत्रों से गौरव।
7.शुक्र	शुक्रक्षये मेढ्रवृषणवेदना, मैथुनेऽशक्ति, चिरप्रसेक, शुक्रसंग रक्तप्रवृत्ति – सुश्रुत। **तिमिरदर्शन – (अ. सं)।** दौर्बल्यं मुखशोषश्च पाण्डुत्वं सदनं श्रमः। **क्लैब्यं** शुक्रविसर्गश्च क्षीण शुक्रस्य लक्षणम्। – चरक।	शुक्राश्मरी, अतिप्रदुर्भाव, अतिस्त्रीकामता, वृद्धं शुक्रं
8. मूत्र	मूत्रक्षये वस्तितोद, अल्पमूत्रता च। – सुश्रुत। मूत्रक्षये मूत्रकृच्छं मूत्रवैवर्ण्यमेव च। पिपासा **मुखं च परिशुष्यति**	वस्तितोद, मुर्हुर्मुहु प्रवृति, आध्मान। **कृतेऽप्यकृतसंज्ञ – वाग्भट्ट**
9. पुरीष	हृदयपार्श्व में पीड़ा, वायु का कुक्षी में शब्द के साथ उर्ध्वगमन।	आटोप, कुक्षिशूल।
10 स्वेद	**स्तब्धरोमकूपता,** त्वक् शोषः, स्पर्श वैगुण्य, स्वदेनाश च। स्वेदे **रोमच्युतिः** स्तब्धरोमता, स्फुटनं त्वचः। – **(वा.)।**	त्वक् दौर्गन्ध, कण्डू।

11. आर्तव	आर्त्तवक्षये यथोचितकालादर्शनमल्पता वा योनि वेदना च।– सु	आर्त्तवम् अंगमर्दमतिप्रवृत्तिं दौर्गन्ध्यं च।– सु
12. स्तन	स्तनक्षये स्तनयोर्म्लानिता स्तन्यासम्भवोऽल्पता वा। – सु	स्तनयोरीपीनत्वं मुहुर्मुहुः प्रवृत्तिं तोदं च।– सु
13. गर्भ	गर्भक्षये गर्भास्पन्दनमनुन्नतकुक्षिता च।– सु	गर्भो जठराभिवृद्धि स्वेदं च। – सु

www.ayurvedpg.com

—: षडक्रियाकाल :—

✓ षड्क्रियाकाल सुश्रुत संहिता सूत्र स्थान अध्याय – 21 **''व्रण प्रश्नीय अध्याय''** में वर्णित है।

संचयं च प्रकोपं च प्रसरं च स्थानसंश्रयम्। व्यक्ति भेदश्च यो वेत्ति दोषाणां स भवेत् भिषक्।। (सु. सू. 21/36)

क्रियाकाल :– षड – 6, क्रिया – चिकित्सा, काल – समय = चिकित्सा करने के छः उपयुक्त अवसर।

1. संचय काल – स्वस्थान में दोषों की वृद्धि।

(A) सुश्रुतानुसार दोषों के संचय के लक्षण :–

(1) वात – स्तब्ध पूर्ण कोष्ठता।

(2) पित्त – पीतावभासता, मंदोष्मता।

(3) कफ – गौरव, आलस्य, चयकारण विद्वेष।

(वाग्भट्टानुसार संचय के लक्षण :– चयो वृद्धिः स्वधाम्न्येव प्रद्वेषो वृद्धिहेतुषु। **विपरीत गुणै इच्छाः च।)**

2. प्रकोप काल – दोषों का उन्मार्गगामी होना।

(B) सुश्रुतानुसार दोषों के प्रकोप के लक्षण :–

(1) वात – कोष्ठ तोद संचरण।

(2) पित्त – अम्लिका, पिपासा, परिदाह।

(3) कफ – अन्नद्वेष, हृदयोत्क्लेश।

(वाग्भट्टानुसार प्रकोप के लक्षण :– कोपसतून्मार्गगामिता। लिंगानां दर्शनं स्वेशामस्वास्थ्यं रोगसम्भवः।)

प्रकोपक काल :–

(1) वात – स शीताभ्र प्रवातेषु **घर्मान्ते** च विशेषतः। प्रत्यूषस्य पराह्रे तु जीर्णेऽन्ने च प्रकुप्यति।।

(2) पित्त – तदुष्णैरूष्णकाले च मेघान्ते च विशेषतः। मध्याह्रे चार्द्धरात्रे च जीर्यत्यन्ने च कुप्यति।।

(3) कफ – स शीतैःशीतकाले च बसन्ते च विशेषतः। पूवाह्रे च **प्रदोषे** च भुक्तमात्रे च प्रकुप्यति।।

3. प्रसर काल – स्रोत्रो द्वारा शरीर में सर्वत्र दोषों का फैलना।

(C) सुश्रुतानुसार दोषों के प्रसर के लक्षण :–

(1) वात – विमार्गगमन आटोप।

(2) पित्त – ओष, चोष, परिदाह, धूमायन।

(3) कफ – अरोचक, अविपाक, अंगसाद, छर्दि।

चिकित्सा के नियम – प्रसरावस्था में पहले स्थानगत दोष और बाद आगन्तुज दोष की चिकित्सा की जाती है।

1. तत्र वायोः पित्तस्थानगतस्य पित्तवत् प्रतिकारः।
2. पित्तस्य च कफस्थानगतस्य कफवत्
3. कफस्य च वातस्थानगतस्य वातवत्। (सु. सू. 21/30)

(वाग्भट्टानुसार प्रकोप के लक्षण :– स्वस्थानस्थस्य समता विकारासम्भवः शमः।)

प्रसर अवस्था में. वात के द्वारा दोषों का प्रसर ''15 प्रकार'' से होता हैं।

www.ayurvedpg.com

दोषों	संचय	प्रकोप	प्रसर
(1) वात	स्तब्ध पूर्ण कोष्ठता।	कोष्ठ तोद संचरण।	विमार्गगमन आटोप।
(2) पित्त	पीतावभासता, मंदोष्मता।	अम्लिका, पिपासा, परिदाह।	ओष, चोष, परिदाह, धूमायन।
(3) कफ	गौरव, आलस्य, विद्वेष।	अन्नद्वेष, हृदयोत्क्लेश।	अरोचक, अविपाक, अंगसाद, छर्दि।

4. स्थान संश्रय – 1. स्थानासंश्रय अवस्था में **''दोष–दूष्य सम्मूर्च्छना''** प्रारम्भ हो जाती हैं।

2. व्याधि के **''पूर्वरूप''** प्रकट हो जाते है।

3. स्थानसंश्रय अवस्था में प्रथम कुपित दोषों के कारण **'खवैगुण्य'** होता है तत्पश्चात **''स्रोत्रो दुष्टि''** होती है।

5. व्यक्तावस्था – 1. व्यक्तावस्था में **''दोष–दूष्य सम्मूर्च्छना''** पूर्ण हो जाती हैं।

2. व्याधि के **''रूप (लक्षण)''** प्रकट हो जाते है।

6. भेदावस्था :– 1. रोगों के दोषों की प्रधानता के आधार पर **'भेद'** स्पष्ट हो जाते है।

2. भेदावस्था में व्याधि में **'उपद्रव'** उत्पन्न होने लगते है, चिकित्सा न करने पर रोग **'असाध्य'** हो जाता है।

मनुष्य शरीर प्रमाण :–

1. चरक	**– 84 अंगुल पर्व।**
2. सुश्रुत	**– 120 अंगुल।**
3. अष्टांग संग्रह	**– 84 अंगुल।**
4. अष्टांग हृदय	**– 3½ स्वहस्त।**

'' अग्नि ''

चरक संहिता में अग्नि के भेदों का वर्णन – विमान स्थान अध्याय 6 **'रोगानिक विमान'** अध्याय में,
सुश्रुत संहिता में अग्नि के भेदों का वर्णन – सूत्र स्थान अध्याय 35 **'आतुरोपक्रमणीय'** अध्याय में,
अष्टांग हृदय में अग्नि के भेदों का वर्णन – सूत्र स्थान अध्याय 1 **'आयुष्कामीय'** अध्याय में किया गया है।

अग्नि के भेद :–

चरक – (13) – 7 धात्वाग्नि + 5 भूताग्नि + 1 पाचकाग्नि (चरक, चक्रपाणि)
सुश्रुत – (5) – पाचकाग्नि, रंजकाग्नि, साधकाग्नि, आलोचकाग्नि, भ्राजकाग्नि।
वाग्भट्ट – (23) – 7 धात्वाग्नि + 5 भूताग्नि + 5 पित्त (जठराग्नि) + 3 दोषाग्नि + 3 मलाग्नि। (अष्टांग संग्रह)
त्रिविध अग्नि :– 1. ज्ञानाग्नि 2. दर्शनाग्नि 3. कोष्ठाग्नि। – गर्भोपनिषद।

❖ **न खलु पित्तव्यतिरेकादन्योऽग्निरूपलभ्यते आग्नेयत्वात् पित्ते। (सु. सू. अ. 21/9)**

आचार्य सुश्रुत के अनुसार – शरीर में पित्त के अलावा और कोई अग्नि नहीं है।

दोष	**कोष्ठ (चरक, वाग्भट्ट)**	**(सुश्रुत)**		**दोष**	**अग्नि (च. वि/6/9) बल भेद से**
वात	क्रूर	**क्रूर (वातकफ)**		वात	विषमाग्नि
पित्त	मृदु	मृदु		पित्त	तीक्ष्णग्नि
कफ	मध्य	–		कफ	मंदाग्नि
सर्वदोष	मध्य	मध्य		सर्व	समाग्नि

www.ayurvedpg.com

दोष	अजीर्ण (चरक)		सुश्रुत	वाग्भट्ट	काश्यप	माधव निदान
वात	1. विष्टब्धाजीर्ण		1. विष्टब्धाजीर्ण	1. विष्टब्धाजीर्ण	**1. श्लेष्माजीर्ण**	1. विष्टब्धाजीर्ण
पित्त	2. विदग्धाजीर्ण		2. विदग्धाजीर्ण	2. विदग्धाजीर्ण	2. विदग्धाजीर्ण	2. विदग्धाजीर्ण
कफ	3. आमाजीर्ण		3. आमाजीर्ण	3. आमाजीर्ण	3. आमाजीर्ण	3. आमाजीर्ण
सर्वदोष	**4. सम्यकाजीर्ण**		4. रसशेषाजीर्ण	4. रसशेषाजीर्ण	4. रसशेषाजीर्ण	4. रसशेषाजीर्ण
						5. दिनपाकी अजीर्ण
						6. प्राकृत अजीर्ण

अजीर्ण की चिकित्सा	सुश्रुतानुसार	वाग्भट्टानुसार		अजीर्ण	चिकित्सा (काश्यप)
1. विष्टब्धाजीर्ण	स्वेदन	स्वेदन		1. श्लेष्माजीर्ण	स्वेदन
2. विदग्धाजीर्ण	वमन	वमन		2. विदग्धाजीर्ण	**प्रावृतः स्वपेत**
3. आमाजीर्ण	लंघन	लंघन		3. आमाजीर्ण	आमस्योद्धरणं पथ्यं
4. रसशेषजीर्ण	दिवा शयन	स्वपेत् दिवा		4. रसशेषजीर्ण	**परिशोषण**

1. जठराग्नि :– पाचकाग्नि, कायग्नि, देहाग्नि, अन्ताग्नि, कोष्ठाग्नि – ये सभी जठराग्नि के पर्याय हैं।।

श्रेश्ठता :– **अन्नस्य पक्ता सर्वेषां पक्तृणामधिपो मतः। तन्मूलास्ते हि तद् वृद्धिक्षयवृद्धिक्षयात्मकाः।। (च. चि. 15)**

अन्य सभी अग्नियाँ जठराग्नि पर ही आश्रित हैं, अतः जठराग्नि सभी में श्रेष्ठ है।

पाचन में अग्नि क्रम – जठराग्नि → भूताग्नि → धात्वाग्नि।

2. भूताग्नि :– भौमाप्याग्नेयवायव्याः पंचोष्माणः सनाभसाः।
पंचाहारगुणान् स्वान्स्वान्पार्थिवादीन्पचन्ति हि। (च. चि. 15)

- **'आहार पाचक अग्नि – जठराग्नि।'** **'आहार गुण पाचक अग्नि – भूताग्नि।'**
- द्वारकानाथ के अनुसार भूताग्नि का स्थान 'यकृत' है।

3. धात्वाग्नि :– स्वस्थानस्यस्थ कायाग्नेः अंशाधातुषु संश्रिता। तेषां सादाति दीप्तिभ्यां धातुवृद्धिक्षयोद्भवः।।
पूर्वो धातुः परं कुर्याद् वृद्धः क्षीणश्च तद्विधम्। (अं. ह्र. सू. 11/34)

(1) धातु व धात्वाग्नि का सम्बन्ध :–

1. धातु α 1/धात्वाग्नि अर्थात् यदि धात्वाग्नि की वृद्धि होगी तब धातुओं का क्षय होगा।

(2) जठराग्नि व धात्वाग्नि का सम्बन्ध –

2. जठराग्नि α धात्वाग्नि अर्थात् यदि जठराग्नि तीव्र होगी तब धात्वाग्नि की वृद्धि होगी।

उदा. - Hypothyrodism → Wt grain, Hyperthyrodim →Wt. Loss.

"आहार पाक"

आहार पाचन क्रम का वर्णन – चरकसंहिता में चिकित्सा स्थान ग्रहणी अध्याय 15 में मिलता है।

Digestion and Metabalism in Ayurveda → लेखक सी. द्वारकानाथ।

Concept of "Agni" in Ayurveda → लेखक बी. भगवान दास।

आहार पाक :– 2 अवस्थायें है। – (A) अवस्था पाक = Digestion
(B) निष्ठा पाक = Metabalism।

www.ayurvedpg.com

(A) अवस्था पाक–(1.) प्रथमावस्था :– अविदग्धावस्था = **मधुर अवस्था पाक।**

1. अन्नस्य भुक्तमात्रस्य षड्रसस्य प्रपाकतः। मधुराद्यात **कफो भावात फेनभूतं** उदीर्यते।। (च. चि. 15/9)

(2.) द्वितीयवस्था = विदग्धावस्था = **अम्ल अवस्था पाक।**

2. परं तु पच्यमानस्य विदग्धस्य अम्लभावतः। आशयाच्चयमानस्य **पित्तम् अच्छम् उदीर्यते।।** (च. चि. 15/10)

(3.) तृतीयावस्था = पक्वावस्था = **कदु अवस्था पाक।**

3. पक्वाशयं तु प्राप्तास्य शोष्यामाणस्य बह्निना। **परिपिण्डित पक्वस्य वायुः** स्यात् कटु भावतः।। (च. चि. 15/11)

अवस्था पाक	स्थान	दोष प्रादूर्भाव
1. मधुरावस्था	आमाशय	कफ
2. अम्लावस्था	ग्रहणी (पच्चमानाशय)	पित्त
3. पक्वास्था	पक्वाशय	वत

(B) निष्ठपाक = विपाक :– इसके अंतर्गत भूताग्नि एवं धात्वाग्नि पाक आता है।

विपाक के भेद :– 3 – (1) मधुर (2) अम्ल (3) कटुविपाक (आत्रेय सम्प्रदाय)

2 – (1) लघु विपाक (2) गुरू विपाक (धन्वतरि सम्प्रदाय)

1. आहार परिणामकर भाव = 6 :– (चरक, अष्टांग संग्रह)

1. **अग्नि** – उष्मा पचति।
2. **वायु** – वायुः अपकर्षति।
3. **स्नेह** – **स्नेहो मार्दवं जनयति।**
4. **क्लेद** – **क्लेदः शैथिल्यम् आपादयति।**
5. **काल** – कालः पर्याप्तं अभिनिर्वर्तयति।
6. **समयोग** – परिणाम धातुसाम्यकरः सम्पद्यते।

अष्टविध आहार विशेषायतन

(1) प्रकृति – **तत्र प्रकृतिरूच्यते स्वभावो,** यः स पुनराहारौषध द्रव्याणां स्वभाविको गुर्वादिः गुणयोग :।

(2) करण – **करणं पुनः स्वाभाविकानां द्रव्याणाभिसंस्कारः। संस्कारो हि गुणान्तराधानम उच्यते।।**

(3) राशि – **राशिस्तु सर्वग्रह परिग्रहौ मात्रामात्रफलविनिश्चायार्थः।** आहार द्रव्यो की मात्रा (प्रमाण) को राशि कहते है।

राशि के 2 प्रकार :– **1. सर्वग्रह –** आहार द्रव्यो की एक साथ ली जाने वाली सम्पूर्ण मात्रा।

2. परिग्रह – आहार में उपस्थित प्रत्येक घटक की पृथक पृथक मात्रा।

(4) संयोग – 'संयोग पुर्नद्वयोः बहूनां वा द्रव्याणां संहितीभावः।

(5) देश – आहार द्रव्य तथा उपभोक्ता का उत्पत्ति स्थान देश कहलाता है।

(6) काल – **कालो हि नित्यगश्चावस्थिकश्च।** काल दो प्रकार का होता है।

1. नित्यग – नित्यगस्तु ऋतुसात्म्यापेक्षः। – नित्यग 'ऋतुसात्म्य' की अपेक्षा रखता है

2. आवस्थिक – तत्र आवस्थिको विकारमपेक्षेते। – यह 'विकार' की अपेक्षा रखता है।

(7) उपयोग संस्था – **'तत्र उपयोग नियमः स जीर्णलक्षणापेक्षः।'**

(8) उपयोक्ता – आहार का जो उपयोग करता है उसे उपयोक्ता कहते हैं

ओकसात्म्य उपयोक्ता के अधीन रहता है।

✓ **सप्ताहार कल्पना :-** स्वभाव संयोग संस्कार मात्रा देश काल उपयोगव्यवस्थाः सप्ताहारकल्पना - (अ.सं.सू. 10/4)

www.ayurvedpg.com

"तैलबिन्दु मूत्र परीक्षा – योग रत्नाकर"

योग रत्नाकर ने अष्टविध परीक्षा के अंतगर्त तैल बिन्दु मूत्र परीक्षा का वर्णन किया है। –

"नाडी मूत्रं मलं जिह्वा शब्द स्पर्शदृगाकृति"।

विधि – रात्रि के अंतिम प्रहर/सूर्योदय से पूर्व रोगी को जगाकर स्वच्छ कांच पात्र में मूत्र त्याग करावें। आदि और अंत की धार छोड़कर मध्य का मूत्र ले एंव कांच पात्र को ढककर सूर्योदय तक रख छोड़ देवें। सूर्योदय के पश्चात् घास की एक सींक तिल तैल में डूबोकर 1 बूंद तैल की मूत्र में छोड़ देंवे।

(अ) मूत्र में –
(1) तैल बिन्दु डालते ही फैल जाय – साध्य रोग
(2) न फैलकर एक स्थान पर स्थिर रहे – कष्ट साध्य रोग
(3) तैल बिन्दु मूत्र की तली में डूब जाए – असाध्य रोग

(ब) तैल बिन्दु :–
(1) पूर्व दिशा की ओर फैल जाए – शीघ्र निरोग व सुखी।
(2) पश्चिम दिशा की ओर फैल जाए – निरोगी व सुखी।
(3) उत्तर दिशा की ओर फैल जाए – निश्चित रूप से आरोग्य।
(4) दक्षिण दिशा की ओर फैल जाए – उत्तरकाल में क्रमशः निरोगी।

(5) ईशान कोण में तैल बिन्दु फैल जाए – जीवन 1 माह केवल।
(6) आग्नेय कोण में – मृत्यु निश्चित।
(7) नैऋत्य कोण में – मृत्यु निश्चित।
(8) वायव्य कोण में तैल बिन्दु फैल जाए – अमृत सेवन से भी जीवित नहीं।

(स) दोशानुसार तैल बिन्दु परीक्षा :–

दोष	**तैल बिन्दु का आकार**
1. वात विकार	सर्प सदृश्य
2. पित्त विकार	छत्र सदृश्य
3. कफ विकार	मुक्ताकार

- ❖ **मूत्र में तैल बिन्दु में छिद्र दिखे** – गतायु।
- ❖ **मूत्र में तैल बिन्दु चलनी सदृश्य दिखे** – कुल दोष या प्रेत दोष।
- ❖ **मूत्र में तैल बिन्दु की आकृति मनुष्य सदृश्य दिखे/दो मस्तिष्क दिखे** – भूत दोष।

✓ **कब चिकित्सा करें :–**

जब तैल बिन्दु की आकृति – हंस, कारण्ड पक्षी, हाथी, चंवर, छाता, तोरण, कमल, तालाब, अट्टालिका आदि के सदृश्य दिखें।

X कब चिकित्सा नहीं करें :–

जब तैल बिन्दु की आकृति – कूर्म (कछुआ), सौरभ (भैंस), करण्ड मण्डल (मधुमक्खी का छत्ता)
हल, शस्त्र, खडंग, मूसल, दण्ड, बाण
शिरहीन मनुष्य, खण्ड गात्र (मानव शरीर का कटा अंग)
तिराहा या चौराहे की आदि के सदृश्य दिखें।

www.ayurvedpg.com

''नाडी परीक्षा'' – (शारंग्धर पूर्व. खण्ड. अध्याय 3)

'नाडी विज्ञानम्' नामक ग्रन्थ के रचेयिता वैशेषिक दर्शनकार **महर्षि कणाद** है।
'नाडी परीक्षा' नामक ग्रन्थ के रचेयिता **रावण और गंगाधर राय** दोनों है।
आयुर्वेद ग्रन्थों में नाडी परीक्षा का सर्वप्रथम उल्लेख 'शारंग्धर संहिता' के पूर्व खण्ड के 3 अध्याय में मिलता है।

नाडी परीक्षा :– कस्याङ्गुष्ठमूले या धमनी जीवसांक्षिणी। तच्चेष्टया सुखं दुःखं ज्ञेयं कास्यस्य पण्डितैः।।
हाथ के अंगुठष्मूल की धमनी (**जीवसांक्षिणी**) – जीव (आत्मा) की सांक्षिणी कहलाती है।

- **नाडी का स्थान** – अंगुष्ठ मूल।
- **नाडी का पर्याय** – जीवसांक्षिणी (आत्मा की उपस्थिति की ग्वाही देने वाली)
- **नाडी से ज्ञान** – सुख (स्वास्थ्य), दुःख (विकार) का ज्ञान।

नाडी परीक्षा की विधि :–

1. नाडी परीक्षा **''प्रातःकाल''** रिक्त कोष्ठावस्था में की जाती हैं।
2. पुरूषो में – दायें हाथ की और स्त्रियों में – बांये हाथ की धमनी देखनी चाहिए।
3. हाथ की तर्जनी, मध्यमिका एवं अनामिका अंगुलियों को धमनी पर रखकर
   क्रमशः वात, पित्त, कफ की परीक्षा करे।

शारंग्धरानुसार दोषानुसार नाडी की गति :–

दोष प्रकोप	नाडी की गति	उदाहरण
1. वात दोष में	सर्प, जलौका	नाडी धत्ते मारूत्कोपे जलौकासर्पयोर्गतिम्।
2. पित्त दोष में	कुलिंग, काक, मण्डूक।	कुलिंगकाकमण्डूकगति पित्तस्य कोपतः।
3. कफ दोष में	हंस, पारावत।	हंसपारावतगति धत्ते श्लेष्मस्य प्रकोपतः।
4. सन्निपातज में	लाव, तित्तर, बत्तख	लावतित्तरवर्त्तीनां गमनं सन्निपाततः।
5. द्विद्वोषज में	कभी मन्द, कभी तीव्र	कदाचिद् मंदगमना, कदाचित वेगवाहिनी।

❖ असाध्य नाडी – स्थानविच्युता हन्ति।
❖ प्राणनाशिनी नाडी – 1. स्थित्वा स्थित्वा (धीरे–धीरे) चलति, 2. अतिक्षीणा, 3. अतिशीता।

शारीरिक भाव के अनुसार नाडी की गति :–

क्रमांक	शारीरिक भाव	नाडी की गति
1.	ज्वर में	सोष्ठा, वेगवती।
2.	दीप्ताग्नि में	लघ्वी, वेगवती
3.	**काम –क्रोध में**	**वेगवहा नाडी।**
4.	**चिन्ता–भय में**	**क्षीण नाडी।**
5.	आमदोष में	गरीयसी
6.	असृग्पूर्णा	कोष्णा गुर्वी।
7.	मंदाग्नि, क्षीणधातु	मन्दतरा
8.	क्षुधित पुरूष में	चपला।
9.	तृप्त मनुष्य में	बहति स्थिरा।
10.	**स्वस्थ पुरूष में**	**स्थिरा तथा बलवती नाडी।**

www.ayurvedpg.com

"प्रकृति"

1. शुक्र शोणित संयोगे यो भवेत् दोष उत्कटः। प्रकृतिः जायते तेन तस्या मे लक्षणं श्रृणुः।। (सु.शा. 4/62)

प्रकृति के प्रकार :–

दोषज प्रकृति – 7	भौतिक प्रकृति – 5 (सु. शा)	मानस प्रकृति – 16
1. वातज – हीन 2. पित्तज – मध्यम **3. कफज – उत्तम** 4. वात पित्तज – (निन्दनीय) 5. वात कफज – (निन्दनीय) 6. पित्तकफज – (निन्दनीय) **7. त्रिदोषज – (सम) श्रेष्ठ**	1. नाभस – पवित्र आचरण वाला, विशाल छिद्रोवाला, चिरजीवी। 2. वायव्य – वातिक 3. आग्नेय – पैत्तिक 4. जलीय – कफज 5. पार्थिव – स्थिर, विपुल, बलवान शरीरवाला, क्षमावान।	1. सात्विक – 7 उत्तम 2. राजस – 6 मध्यम 3. तामस – 3 हीन **(काश्यप – 18)** 1. सात्विक – 8 2. राजस – 7 3. तामस – 3

शारंर्ग्धरानुसार दोषज प्रकृति के लक्षण :–

वातज प्रकृति के लक्षण	पित्तज प्रकृति के लक्षण	कफज प्रकृति पुरूष के लक्षण
1. अल्प केश 2. कृशता 3. शरीर रूक्षता 4. अत्यधिक वाचाल होना 5. स्वप्न में आकाश में उड़ना	1. समय से पूर्व पालित्य 2. धीमान्, (बुद्धिमान) 3. अतिस्वेद 4. रोषण (अत्यधिक क्रोध) 5. स्वप्न में अग्नि दर्शन	1. गंभीर बुद्धि 2. स्थूल अंग 3. स्निग्ध केश 4. महाबली 5. स्वप्न में जलाशय दर्शन
अल्पकेशः कृशो रूक्षो वाचालश्चमानसः। आकाशचारीः स्वप्नेषु वातप्रकृतियो नरः।	**अकालपलितैर्व्याप्तो धीमान्स्वेदी च रोषणः। स्वप्नेषु ज्योतिषां द्रष्टा पित्तप्रकृतियो नरः।**	**गम्भीरबुद्धिः स्थूलांगः स्निग्धकेशो महाबलः स्वप्ने जलाशयलोकी श्लेष्मप्रकृतियो नरः।।**

चरकानुसार दोषज प्रकृति के लक्षण :–

वात प्रकृति पुरूष के लक्षण	पित्तज प्रकृति पुरूष के लक्षण	कफज प्रकृति पुरूष के लक्षण
बहुप्रतानकण्डरासिराप्रतानाः, शीघ्रत्रासरागविरागा, **श्रुतग्राहि, अल्पस्मृति** सततसन्धिशब्दगमिनश्च अल्पबल, अल्पायु,, अल्पधन	सुकुमारअवदात गात्रा, प्रभूत पिल्लु, व्यंग, तिलपिडका, क्षिप्र वलीपलितखालित्य दोषाः, **प्रभूताशनपाना, दन्तशूका** प्रभूत सृष्ट स्वेद मूत्र पुरीषाः मध्यम–बल, आयु, ज्ञान विज्ञान	दृष्टिसुख,सुकुमारअवदातगात्रा प्रभूतशुक्रव्यवायापत्या, मन्द चेष्टाहार व्यवहार प्रसन्न स्निग्ध वर्णस्वरा, **ओजस्विनः शान्ताः, सात्विकः** सत्यसन्धः।

सुश्रुतानुसार दोषज प्रकृति के लक्षण :–

वात प्रकृति पुरूष के लक्षण	पित्तज प्रकृति पुरूष के लक्षण	कफज प्रकृति पुरूष के लक्षण
प्रजागरूकः, शीतद्वेषी, दुर्भगः, स्तेनो, मत्सर्यनार्यो गान्धर्वचित्तः, स्फुटितकरचरणो ऽतिरूक्षश्मश्रुनखकेशः **क्रोधी, दन्तनखखादी** च भवति, कृशपरूषो धमनीततः, **प्रलापी, द्रुतगति,** अटन।	स्वेदनो दुर्गन्धः, पीतशिथिलांगः, ताम्र नखतालुजिह्वौश्ठ–पाणिपादतलो, दुर्भगो, **वलीपलितखालित्य जुष्टो** उष्णद्वेषी **क्षिप्रकोपप्रसादो** मध्योबलो मध्यमायुश्च। **सदा व्यथितास्यगति मेधावीनिपुणमतिः** विगृह्य वक्ता, तेजस्वी, **दुर्निवारवीर्यः।** स्वप्न में कनक,पलाश,कर्णिकार दर्शन	शुक्लाक्षः **स्थिरकुटिलालिनीलकेशो,** लक्ष्मीवान् जलमृदंग सिंहघोषः, **रक्तान्तनेत्रः सुविभक्तगात्रः** सत्त्वगुणोपपन्न, **क्लेशक्षमो, दृढशास्त्रमति,** स्वप्न में– हंस,चक्रवाक,जलाशय दर्शन **स्थिरमित्रधनः, परिनिश्चतवाक्यपदः।**

प्रकृति बाधकता :–विषजातो यथा कीटो न विषेण विपद्यते। तद्वत्प्रकृतयो मर्त्य शक्नुवन्ति न बाधितुम्। –सुश्रुत

www.ayurvedpg.com

(2) 'मानस प्रकृति – 16' (च. शा. 4 महती गर्भावक्रान्ति)

(A) सात्विक प्रकृतियां :– (7) चरक (काश्यप – 8 + प्राजापत्य सत्व)

1. ब्रह्मकाय – शुचि, ज्ञानविज्ञानवचनप्रतिवचनसम्पन्नं, कामक्रोध–लोभमोह–मानईर्ष्या–हर्ष, अमर्षरहित समं सर्वभूतेषु। **(ब्राह्म सत्व सर्वोपरि – ब्राह्मत्यन्त शुद्धं व्यवस्येत्।)**
2. ऐन्द्रसत्व – ऐश्वर्यवन्तरम्, **आदेय वाक्यं, दीर्घ दर्शिनं,** धर्माथकामाभिरतम्।
3. याम्य सत्व – **लेखास्थवृतं, प्राप्तकारिणम्, असम्प्रहार्य, उत्थानवन्तं व्यपगत रागेर्ष्याद्वेषमोहं याम्यं।**
4. गार्न्धवकाय – प्रियनृत्यगीतवादि स्त्रोतपाठश्लोकारख्य, कथाइतिहासपुराणनिपुण गन्धमात्या, असूयकं
5. कौबेर सत्व – स्थानमानोपभोग, **परिवार सम्पन्नं,** धर्मार्थकामनित्यं सुखविहारं, **व्यक्तकोपप्रसादं।**
6. वारूण सत्व – शूरं धीरं शुचिम् अशुद्धि द्वेषिणं, **स्थानकोप प्रसादं।**
7. आर्षसत्व – यज्ञ, अध्ययन, व्रत, होम, ब्रह्मचर्य पालन, प्रतिभा वचन विज्ञानोपधारण शक्ति सम्पन्न, उपशान्त मद–मान–राग–द्वेष–मोह–लोभ।

(B) राजस प्रकृतियां :– (6) चरक (काश्यप – 7 + याक्षसत्व)

1. आसुर सत्व – **शूरं चण्डम् असूयकम्** ऐश्वर्यवन्तम्।
2. राक्षस सत्व – अमर्षिणम् **अनुबन्धकोपं** छिद्रप्रहारिणं स्वप्नायास बहुलं ईर्ष्युः।
3. पिशाच सत्व – **महाशनं,** अशुचि, शुचिद्वेषिणं – भीरू भीषतिसार।
4. प्रेत सत्व – **आहारकाममति**, दुःखशीलाचारोपचारं।
5. सर्प सत्व – क्रुद्ध शूरं + अक्रुद्ध भीरू, **तीक्ष्णमायासबहुलं** सन्त्रस्तगोचरं।
6. शाकुन सत्व – **अनुषक्तकाममजस्रम्** आहार विहार परम्।

(C) तामस प्रकृतियां :– (3)

1. पाशव सत्व – निराकरिष्णु मेधसं, जुगुप्सित, (निन्दनीय) आचार, आहार।
2. मात्स्य सत्व – भीरूम् बुधम् आहारलुब्ध, अनवस्थितमन, सरणशीलं।
3. वानस्पत्य सत्व – अलसं **केवलमभिनिविष्टम् आहारे,** सर्वबुद्ध्यंगहीन।

'मानस प्रकृति – 16' (सु. शा. 4 गर्भव्याकरण)

(a) सात्विक प्रकृतियां :– (7) चरक, सुश्रुत (काश्यप – 8 + प्राजापत्य सत्व)

1. ब्रह्मकाय – शौच, आस्तिक्य, **अभ्यासो वेदेषु,** गुरूपूजनम्, प्रियातिथि।
2. ऐन्द्र काय – माहात्म्यं, शौर्यमाज्ञा, **सततं शास्त्रबुद्धिता,** भृत्यानां भरणं।
3. याम्य काय – **प्राप्तकारी,** दृढ उत्थानं, र्निभयः, स्मृतिवान्, **शुचि,** रागमोहमदद्वेषैः वर्जिता।
4. गार्न्धवकाय – गन्धमाल्य प्रियत्वं, नित्य–वादित्र कामिता, विहारशीलता।
5. कौबेर काय – **मध्यस्तथा,** सहिष्णुत्वं, धनसंचय, स्थानमानोपभोग, **महाप्रसवशक्तित्वं।**
6. वारूण काय – शीतसेवा, **सहिष्णुत्वं, पैगल्यं** हरिकेशता, प्रियवादि।
7. ऋर्षि काय – जपव्रत ब्रह्मचर्य होम अध्ययन– सेविनम्, ज्ञानविज्ञान सम्पन्न।

(b) राजस प्रकृतियां :– (6) चरक, सुश्रुत।

1. आसुर काय – तीक्ष्णमायासिनं, भीरू, **चण्डं, मायान्वित्।**
2. राक्षस काय – **एकान्तग्राहिता** रौद्र असूया धर्मबाह्यता।
3. पिशाच काय – उच्छिष्टाहारता, **साहसप्रियता,** स्त्रीलोलुपत्वं, नैर्लज्ज्यं।
4. प्रेत काय – असंविभागमलसं दुःखशीलमसूयकम्, लोलुपं विदुर्नरम्।
5. सर्प काय – **विचाराचारचपलं** सर्पसत्त्वं विदुर्नरम्।
6. शाकुन काय – अमर्षणोऽनवस्थायी शाकुन कायलक्षणम्।

(C) तामस प्रकृतियां :– (3)

1. पाशव काय – निराकरिष्णु, दुर्मेधस्त्वं, स्वप्ने मैथुननित्यता।
2. मात्स्य काय – भीरूत्वं, सलिलार्थिता, अनवस्थिता।
3. वानस्पत्य काय – एकस्थानरतिः नित्यमाहारे केवलं रतः, सत्त्वधर्मकामार्थवर्जितः।

www.ayurvedpg.com

"हृदय"

1. स्थान – स्तनयोः मध्याधिष्ठायोरस्यामाशयद्वारं सत्वरजस्तमसामधिष्ठानं हृदय नाम मर्म।

2. चेतनास्थान – हृदय चेतनास्थानं।

3. पर्याय – हृदय, महत्, अर्थ।

4. वर्णन – पुण्डरीकेण सदृशं हृदय स्याद्धोमुखम्। जाग्रतस्तत विकसति स्वपतश्च निमीलति। (सु. शा. 4/32)

5. आकृति – पुण्डरीकस्य संस्थानं कुम्भिकायां फलस्य च। – भेल

5. प्रमाण – **स्वपाणि तल कुञ्चित संमिताणि। –** हृदय का प्रमाण हथेली के गड्डे के बराबर होता है।

6. आश्रय – षड्ंग, ज्ञानेन्द्रियां एवं उनके विषय, सगुण आत्मा, मन, चिन्त्य और पर ओज का आश्रय स्थान है।

–ः श्वास (श्वसनम्) ः–

नाभिस्थः प्राणपवनः स्पष्टवा हत्कमलान्तरणम्। कण्ठाद् बहिर्विनिर्याति पातु विष्णुपदामृतमे।

पीत्वा चाम्बर पीयूष पुनरायाति वेगतः। प्रीणयन्देहमखिलं जीवयज्जठरानलम्। (शा. पूर्व 3/48–49)

(1) शारंर्ग्धर ने उदान वायु को फुफ्फुस का आधार बतलाकर श्वास प्रश्वास प्रक्रिया का वर्णन किया है।

(2) शारंर्ग्धर ने शुद्ध वायु को **"विष्णुपदामृत एवं अम्बर पीयूष"** कहा है।

शुद्धवायु – 'विष्णुपदामृतम्' + अम्बरपीयूषं।

(3) शारंर्ग्धर ने प्राणवायु का स्थान 'नाभि' को माना है।

(4) श्वसन प्रक्रिया प्राण, उदान, व्यान वायु, साधक पित्त एवं अवलम्बक कफ की सहायता से पूरी होती है।

(5) योग चूडामणी – मनुष्य शरीर में 1 दिन में 21,600 बार श्वसन क्रिया।

(6) चरकानुसार – ष्ठीवन, क्षवथु, उदगार, श्वसन एवं आहार पान ये सभी प्राण वायु के कर्म है।

"वस्ति"

नाभिपृष्ठ कटी मुष्क गुदवंक्षण शेफसाम्। एकद्वारः तनुत्वको मध्ये वस्तिः अधोमुखः।

वस्ति :– नाभि, पृष्ठ, कटी, वृषण, गुदा, वंक्षण और लिंग इनके बीच में एक द्वारा वाली पतले चर्म से बनी हुई नीचे को मुख की हुई वस्ति होती है।

(1) आकार – 'अलाबू इव रूपेण' अलाबू के आकार की।

(2) अन्य नाम – मूत्राशय तथा मलाधार।

(3) प्राणायतनमुत्तमम् – प्राणों का आयतन तथा श्रेष्ठ है। (ओज)

(4) स्थान – वस्ति गुदावस्थि विवर में स्थित है। (नाभि, पृष्ठ, कटि, मुष्क, गुदा, वंक्षण तथा मेढ्र के मध्य में)

(5) समानश्रयी – वस्ति, वस्तिशिर, शिश्न, वृक्षण, गुदा समानाश्रयी है।

मूत्र निर्माण प्रक्रिया

पक्वाशयगतास्तत्र नाडयो मूत्रवहास्तु याः। तर्पयन्ति सदा मूत्रं सरितः सागरं यथा।।

सूक्ष्मत्वान्नोपलभ्यन्ते मुखन्यासां सहस्रशः। नाडीभिरूपनीतस्य मूत्रस्यामाशयान्तरात।।

जाग्रतः स्वपतश्चैव स निःस्यन्देन पूर्यते। आमुखात्सलिले न्यस्तः पार्श्वेभ्यः पूर्यते नवः।।

घटो यथा तथा विद्धि वर्स्मूत्रेण पूर्यते। (सु.नि. 3/17)

मूत्र निर्माण प्रक्रिया का वर्णन – सुश्रुत ने किया है। मूत्र निर्माण प्रक्रिया – 'पक्वाशय' में शुरू होती हैं।

–ः रस, रक्त का संवहन ः–

रस :1. रस धातु का स्थान हृदय है वहां से वायु द्वारा रस का संवहन 24 धमनियों से सर्व शरीर में होता है।

ऊर्ध्व – 10, अधः – 10 और 4 तिर्यक। (1) शब्द अन्तान वत (2) अर्चि सन्तानवत (3) जलसंतानवत।

व्यान वायु :– रस एवं रक्त का संवहन तथा स्वेद का विस्रावण व्यान वायु करती है।

www.ayurvedpg.com

"षडचक्र"

चक्र	स्थान	तत्व	आकार	दल	वर्ण	अक्षर	ज्ञानेन्द्रिय	कर्मेन्द्रिय	ध्यान
1. मूलाधार चक्र Pelvic Plexus	गुदा	पृथ्वी	अथाधार पद्मं	4	पीत	व.श.ष. स.	नासा	गुदा	काव्यसाहित्य शास्त्रज्ञान
2. स्वाधिष्ठान चक्र Hypogestric Plexus	पेडू	जल	सन्दिूरपूररूचि अरूण पदम्	6	रक्त	व,भ, य,र,ल	रसना	शिश्न	अहंकारादि समाप्त
3. मणिपुर चक्र Coeliac Plexus	नाभि	अग्नि	पूर्णमेघप्रकाशं नीलकमल	10	नील	ड–फ	नेत्र	पद	सरस्वती प्रसन्न
4. अनाहत चक्र Cardiac Plexus	हृदय	वायु	हृदि पंकजं (गुप्त गुलाब)	12	धूम्र	क–ठ	त्वक	हस्त	विवेक प्राप्ति
5. विशुद्ध चक्र	कण्ठ	आकाश	धूमधूम्रवभासं	16	रक्त	अ–अः	कर्ण	वाक्	आनंद, ज्ञान
6. आज्ञा चक्र	भ्रूमध्य	महतत्व	ब्रह्मसूत्र प्रबोधं	2	श्वेत	ह. क्ष	–	–	वाक्य सिद्धि

आज्ञा चक्र से ऊपर मानस चक्र, मानस चक्र से ऊपर सोम चक्र व सोम चक्र ऊपर सहस्त्रार चक्र होता है।

- ❖ षडचक्र को 'प्राचीन तन्त्र शरीर' भी कहते है।
- ❖ विशुद्ध चक्र को 'ब्रह्म द्वार', आज्ञा चक्र को 'अंधकार में ज्योति और 'अनाहत चक्र को 'गुप्त गुलाब' भी कहते है।
- ❖ गोरक्ष संहिता में नाडियों की संख्या 72,000 बताई गई है। जिसमें से इडा, पिंगला, सुषुम्णा, गांधारी, हस्तिजिह्वा, कुहू, **सरस्वती,** पूषा, शंखिनी, पयस्विनी, वारूणा, अलंबुषा, शिवोदरी, यशस्विनी – प्रमुख है।
  1.इडा = चन्द्र नाड़ी – वाम नासारन्ध्र से **2. पिंगला = सूर्य नाड़ी –** दक्षिण नासारन्ध्र से संबंधित है।

"निद्रा"

आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य – ये त्रि उपस्तम्भ है। **त्रय उपस्तम्भा इत्याहारः स्वप्नो बह्मचर्यमिति। (च. सू. 11/33)**

निद्रा का लक्षण – अभाव प्रत्ययालम्बनावृत्तिः निद्रा। (यो. सू. 1/10)– मन के द्वारा समस्त विषयों के ग्रहण करने की क्रिया के परित्याग की वृत्ति का नाम निद्रा है। इस समय केवल आन्तरिक मन जाग्रत रहता है।

निद्रा की उत्पत्ति –'यदा तु मनसि क्लान्ते कर्मात्मानः क्लमान्विताः। विषयेभ्यो निवर्तन्ते तदा स्वपिति मानवः।। मन के साथ इन्द्रियों का अपने विषयों से निवृत्त होने पर मनुष्य सोता है। (च. सू. 21)

सम्यक निद्राश्रित :– सुख–दुख, पुष्टि–कार्श्य, बलाबलम्, वृषता–क्लीवता, **ज्ञान–अज्ञान**, जीवन–मृत्यु।

- ✓ वाग्भट्ट ने सामान्य निद्राकाल – 2–3 याम बतलाया है। (1 याम = 3 घण्टे)
- ✓ भावप्रकाश ने दिवास्वप्न का काल – 1 मूर्हूत माना है।

दिवास्वप्न के योग्य – (1) गीताध्ययनमद्यस्त्रीकर्ममाराध्वकर्षिता (2) अजीर्णिनः (3) क्षताःक्षीणा
(4) वृद्धाबालास्तथाऽबलाः। (5) तृष्णातिसारशूलार्ताः (4) हिक्का –श्वास रोगी
(6) कृशाः (8) पतितभिहत (9) यानप्रजागरैः क्रोधशोकभय क्लान्ताः।
(सुश्रुतानुसार दिवास्वप्न का विधान – दिवास्वप्नश्च तृट् शूल हिक्का जीर्णातिसारिणाम् – सु. शा. 4/47)

दिवास्वप्न हेतु ऋतु :– ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर अन्य ऋतु में दिवास्वप्न से **कफपित्त का प्रकोप** होता है।
सुश्रुतानुसार – विकृतिः हि दिवास्वप्नो नाम, तत्र स्वपतामधर्मः सर्वदोषप्रकोपश्च।
(ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर अन्य ऋतु में दिवास्वप्न से सर्वदोषप्रकोप का प्रकोप होता है)

दिवास्वप्न का निषेध :– मेदस्विनः स्नेहनित्याः श्लेमलाः श्लेष्मरोगिणः। दूषीविर्षातश्च दिवा न शयीरन् कदाचन।। (कण्ठरोगी – वाग्भट्ट)।

दिवास्वप्नजन्य विकार :– हलीमक, शिरःशूल, स्तैमित्यं, गुरूगात्रता। अंगमर्द, अग्निनाश, प्रलेपोहृदयस्य च। कास, कोठ कण्डू, व पिडका– उत्पत्ति, स्मृतिबुद्धिप्रमोह, शोफ, पीनस, अर्द्धावभेदक, इन्द्रियार्थ विकार।

www.ayurvedpg.com

रात्रिजागरण का परिणाम – रात्रिजागरण से **वातपित्त** प्रकोप होता है।
रात्रिजागरण हितकारी – कफ मेदो विषार्त्तानां राजौ जागरणं हितम्। (सु. शा. 4/42)

(1) रात्रौ जागरण रूक्षं – (2) स्निग्धं प्रस्वपनं दिवा।
(3) अरूक्षं अनभिष्यन्दि – त्वासीनं प्रचलायितम्।। (च.सू. 21/50)

देहवृत्तौ यथाऽऽहारस्तथा स्वप्नः सुखो मतः। स्वप्नाहारसमुत्थे च स्थौल्यकार्श्ये विशेषतः। (च.सू. 21/51)
चरकानुसार स्थौल्य और कार्श्य विशेषतः आहार एवं स्पप्न पर निर्भर है।

स्थौल्य एवं कार्श्य – **रस निमित्तमेव स्थौल्यं कार्श्य च। (सु. सू. 15/32)** सुश्रुतानुसार स्थौल्य और कार्श्य विशेषतः आहार रस पर निर्भर है।

निद्रानाश की चिकित्सा :– अभ्यंग, उत्सादन, स्नान, मनोनुकूल शब्दगंध, संवाहन, नेत्रतर्पण, शिर एंव वदन में लेप, शाल्यन्न, ग्राम्यानूपोदक मांसरस, दूध, घी, मद्य और मानसिक सुख।

निद्रानिवारक उपाय :– कायविरेचन, शिरोविरेचन, वमन, चिन्ता, क्रोध, भय, व्यायाम, धूम्रपान करना, **रक्तमोक्षण,** उपवास, असुखशय्या, सत्वगुण की अधिकता, तमो गुण पर विजय तथा उदार प्रवृत्ति।

निद्रानाश के हेतु :– (5) – कार्य कालो विकारश्च प्रकृतिः वायुरेव च।
(1) कार्य व्यवस्था (2) प्रतिकूल समय (3) विकारग्रस्त (4) वात एवं पित्त प्रकृति (5) वातप्रकोप।

प्रधान कारण :– हृदयं चेतनास्थानमुक्तं सुश्रुत । देहिनाम्। तमोऽभिभूते तस्मिस्तु निद्रा विशति देहिनाम्।।
जागरण – **सत्वगुण** के कारण, स्वप्न – **रजोगुण** के कारण
निद्रा – **तमोगुण एंव स्वभाव** के कारण होती है।

दर्शन ग्रन्थों में मन की चार अवस्थाओं का वर्णन आया है।
1. जाग्रत् अवस्था 2. सुषुप्ति अवस्था 3. स्वप्नावस्था 4. तुरीयावस्था
निद्रा के भेद :–
चरक – (6) – तमोभवा, श्लेष्मसमुद्भवा, मनःशरीरश्रमसम्भवा, आगन्तुकी, व्याध्यनुवर्तनी, रात्रिस्वभावप्रभवा।
रात्रिस्वभावप्रभवा निद्रा = भूधात्री,
तमोभवा निद्रा = पापों का मूल
शेष 4 निद्राएँ श्लेष्मसमुद्भवा, मनःशरीरश्रमसम्भवा, आगन्तुकी और व्याध्यनुवर्तनी **व्याधि को निर्दिष्ट करती है।**
सुश्रुत – (3) – (1) वैष्णवी (स्वाभावात्) (2) वैकारिकी (3) तामसी। – **अनवबोधिनी**
वाग्भट्ट – (7) – तमोभवा, कफजन्य, **चित्तखेदजन्य, देहखेदजन्य,** आगन्तुज, आमयजन्य, तथा काल स्वभावज।

"स्वप्न"

स्वप्न :– निद्रोपप्लुप्तेन तन्द्रायुक्तेन मनसा विषयग्रहणं स्वप्नः।
स्वप्न के भेद –7– दृष्टं श्रुतानुभूतं च प्रार्थिवं कल्पितं तथा। भाविकं दोषजं चैव स्वप्नं सप्तविधं विदुः। (च.इ. 5)
1. दृष्ट 2. श्रुत 3. अनुभूत 4. प्रार्थिव 5. कल्पित – **निष्फल** स्वप्न होते हैं।
6. भाविक 7. दोषज – **फलित** स्वप्न होते हैं।

–: काश्यपानुसार : –
1. निष्फल स्वप्न –10 :–(1) प्रार्थित (2) कल्पित (3)दृष्ट (4) अनुश्रुत (5) श्रुत (6) भावित (7) ह्रस्व (8) दीर्घ (9) दिवास्वप्न (10) दोषज। – ये सब स्वप्न 'निष्फल' होते है।
2. फलदायी स्वप्न –6 :–1. अदृष्ट 2. अश्रुत 3 अनुक्त 4. अकल्पित 5. अभाषित 6. जो केवल कार्य मात्र हो।

जो स्वप्न रात्रि के प्रथम प्रहर में देखा जाता है उसका फल कम होता है।
जिस स्वप्न को देखने के बाद फिर नहीं सोया जाता है वह स्वप्न अपना पूर्ण फल देने वाला होता है।

www.ayurvedpg.com

"आप्त वचन"

(1) शारंग्धर ने क्लोम को पिपासा का मूल कहा है।
गंगाधर ने क्लोम शब्द से फुफ्फुस व उण्डुक दोनों का ग्रहण किया है।

(2) रसाजानां विकारणां सर्वलंघनम् औषधम्। (च. सू. 28),

(3) रसो निपाते द्रव्याणां। (च. सू. 26)

(4) अहरहर्गच्छति इति रसः। (सु. सू. 14/14)

(5) रस धातु के 2 भेद – **(1) स्थायी रस, (2) पोषक रस** – चक्रपाणि ने बताए है।

(6) **निरूक्ति :– धमनी – ध्मानात् धमन्यः, स्रोत्रस– स्रवणात स्रोतांसि, सिरा – सरणात् सिराः। (चरक)**

(7) रक्त धातु ही एक मात्र धातु है जो पाच्चमहाभौतिक होती है – सुश्रुत
1. विस्रता (पृथ्वी) 2. द्रवता (जल) 3. अग्नि (राग) 4. स्पंदन (वायु) **5. लघुता (आकाश)।**
1. विस्रता (पृथ्वी) 2. द्रवता (जल) 3. अग्नि (राग) 4. चलन (वायु) 5. विलय (आकाश)। **– शा.**

(8) **"रंजितास्तेजसा त्वापः शरीरस्थेन देहिनाम्। अव्यापन्नाः प्रसन्नेन रक्तमित्यभिधीयते।।"** (सु. सू. 14/5)
रक्त की परिभाषा दी है – सुश्रुत ने दी हैं।

(9) **देहस्य रूधिरं मूलं रूधिरेणैव धार्यते। (सु.सू. 14)**

(10) तद्विशुद्धं हि रूधिरं बलवर्ण सुखायुषा। युनक्ति प्राणिनं प्राणः शोणितं ह्यनुवर्तते।। (च.सू. 24/4)
विशुद्ध रक्त का स्वरूप – चरक ने बतलाया हैं।

(11) **लोहितं प्रभवः शुद्धं तनोस्तेनैव च स्थितिः। (अ.ह.सू. 27)**

(12) **'कृतेऽपि अकृतसंज्ञतम्'** लक्षण है – **मूत्रवृद्धि, कफज अतिसार का।**

(13) आर्त्तव को कहा जाता है – बर्हिपुष्प।

(14) हारीत के अनुसार बुद्धि का निर्माण होता है – आकाश एवं वायु महाभूत से।

(15) **स्रोतसामेव समुदयं पुरूषमिच्छिन्ति – (च. वि. 5/4)**

(16) 'वस्ति तोद' मूत्रक्षय और मूत्रवृद्धि दोनों का लक्षण है।

(17) **दूषणात् दोषाः धारणात् धातवः मलीनिकरणात् मलाः। (शारंग्धर)**

(18) तरतम भेद से त्रिदोष के भेद – 63 (वाग्भट्ट, सुश्रुत, काश्यप), 62 (चरक)

(19) ऋग्वेद में त्रिदोष के लिए 'त्रिधातु' शब्द आया है
क्योकि दोष साम्यावस्था में धातु की तरह व्यवहार करते है।

शारंग्धर के अनुसार शरीर हास्र क्रम –

(1) बाल	–	10 वर्ष	(7) शुक्र	–	70 वर्ष
(2) वृद्धि	–	20 वर्ष	(8) विक्रान्त	–	80 वर्ष
(3) छवि	–	30 वर्ष	(9) बुद्धि	–	90 वर्ष
(4) मेधा	–	40 वर्ष	(10) कर्मेन्द्रिय	–	100 वर्ष
(5) त्वक	–	50 वर्ष	(11) मन	–	110 वर्ष
(6) दृष्टि	–	60 वर्ष	(12) जीवन	–	120 वर्ष

वर्णोत्पत्ति में सहायक महाभूत :–

चरक :– (1) अवदात (गौर) – तेज, आकाश, जल
(2) कृष्ण वर्ण – वायु, अग्नि, पृथ्वी
(3) श्याम वर्ण – सर्व महाभूत समान।

सुश्रुत :– (1) गौर :– तेज + जल (2) कृष्ण :– तेज + पृथ्वी
श्यामवर्ण– 2– (3) गौर श्याम :– तेज + जल + आकाश। (4) कृष्ण श्याम :– तेज + पृथ्वी + आकाश।

www.ayurvedpg.com